अध्याय- २

श्यौराज सिंह बेचैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रस्तावना

[अ]. व्यक्तित्व-:

क-: जीवन परिचय, जन्म तथा वंश, माता-पिता, बचपन।
ख-: शिक्षा, शैक्षिक-अनुभव।
ग-: विवाह, परिवार, पत्र-पत्रिकाओं में लेख, छन्द।
घ-: पुरस्कार एवं सम्मान, स्वभाव वैशिष्ट्य, व्यक्तित्व का प्रभाव।
ड़-: सामाजिक परिवेश, संगोष्ठियाँ।

[ब]. कृतित्व:-

क-: कहानी संग्रह।
ख-: कविता संग्रह।
ग-: आत्मकथा।
घ:- उपन्यास।
ड़:- यात्रा साहित्य।
च:- आलोचनात्मक एवं सैद्धान्तिक पुस्तकें।
छ:- पत्रकरिता सम्बन्धित पुस्तकें।
ज:- अनूदित प्रकाशित ग्रन्थ।
झ:- बेचैन की रचनाओं पर प्रकाशित आलोचनात्मक ग्रंथ।
ञ:- अप्रकाशित ग्रन्थ।

[स]. सम्पादन कार्य:-

क:- प्रधान सम्पादन।

ख-: अतिथि संपादन।

ग-: कार्यकारी सम्पादन।

घ:- अन्य संपादन।

[द]. शोधकार्य:-

क:- पी.एच.डी. हेतु।

ख:- डी. लिट्. हेतु।

ग:- अन्य शोधकार्य।

निष्कर्ष

<u>प्रस्तावना</u>-:

संसार का कणकण प्रतिपल परिवर्तनशील है और साहित्य को तो - समाज का दर्पण माना जाता है। इसलिए संसार की बदलती परिस्थितियों के साथसाथ साहित्य में भी -निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं और ये परिवर्तन होने भी आवश्यक हैं। जिस रचनाकार के भीतर साहित्य को समाज के साथ लेकर चलने की भावना होती है वह रचनाकार यकीनन एक उच्च कोटि का साहित्यकार बन जाता है। श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी भी आज के समाज में रहकर उसी समाज से संघर्ष करते हुए एक संघर्षमय जीवन से गुजरते हुए आज एक प्रमुख एवं उच्च कोटि के साहित्यकार बन गए हैं। इन्हें देख कर ऐसा प्रतीत है कि संघर्ष का दूसरा नाम ही श्यौराज सिंह 'बेचैन' बन गया हो और वही जीवन के संघर्ष से जूझते श्यौराज सिंह 'बेचैन' की बहुमुखी प्रतिभा उभरकर हमारे सामने आती है। वे बहुत ही अच्छे एवं प्रसिद्ध कहानीकार,कवि,कथाकार एवं पत्रकार हैं।

[अ]:- <u>व्यक्तित्व :</u>-

हिन्दी कथा-साहित्य में कई साहित्यकार हुए परन्तु बेचैन जी एक ऐसे सहित्यकार हुऐ हैं जो आप बीती को अधिक महत्व देते हैं। इनका यही व्यक्तित्व हिन्दी साहित्यकारों से इनको अलग करता है जिसमें हम इनके जीवन परिचय, जन्म तथा वंश, मातापिता,- बचपन, शिक्षा, शैक्षिक-अनुभव,विवाह,परिवार, पत्रपत्रिकाओं- में लेख, छंद, पुरस्कार एवं सम्मान, स्वभाव वैशिष्ट्य, व्यक्तित्व का प्रभाव, सामाजिक परिवेश, संगोष्ठियाँ आदि को प्रस्तुत कर रहे हैं ।

[क]:- <u>जीवन परिचय</u>:-

साठोत्तरी साहित्यकारों में श्यौराज सिंह बेचैन जी का नाम दलित साहित्य एवं चिंतन में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किए हुए हैं। अस्सी नब्बे के दशक में वे दलित साहित्यकारों में एक चर्चित नाम उभर कर हिन्दी जगत में आया है। किसी भी साहित्यकार के साहित्य जानने के लिए उसके व्यक्तित्व को जानना अति आवश्यक होता है। साहित्यकार भी एक आर्टिस्ट के समान होता है क्योंकि वह जिस साहित्य का सृजन करता है उसका वह खुद का जिया हुआ जीवन का अनुभव होता है। समाज एवं देश कि जो स्थिति एवं परिस्थितियाँ रहती हैं; उसी की वह उपज माना जाता है। जैसा की हमने पढ़ा

सुना और देखा है कि दलित साहित्यकारों का जीवन बहुत ही कठिन स्थितियों से गुजर कर अपने अस्तित्व में आता है जिसका जीता जागता उदाहरण मराठी जगत में डॉ. अम्बेडकर उसके बाद हिन्दी जगत में ओम प्रकाश वाल्मीकि, उसके बाद तुलसीराम, कौशल्या बैसंत्री, शरण कुमार लिम्बाले जैसे बहुत सारे लेखक हुए है जो परिस्थितियों की उपज से रचनाकार बने हैं। इन्होंने कभी कठिनाइयों से मुँह नही मोड़ा लगभग इनके जैसा ही जीवन डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन जी ने भी जिया है। इनकी समस्त रचनाओं का अध्ययन करके हम उनके व्यक्तित्व को पूर्णतया जान सकते हैं।

श्यौराज सिंह बेचैन जी का जीवन बहुत ही दुरूह रहा है। जो भारत की आधी आबादी का निरन्तर प्रतिनिधित्व करता है। उनका साहित्य विशेषकर दलित जीवन एवं नारी जीवन को केंद्र में रखकर अग्रसर होता रहा है। जिसमें इन्होंने दलित एवं नारी समाज की हर समस्या को पहचानकर उनका निरंतर उचित निराकरण बताया है वे जीवन में सबसे अधिक नारी से प्रभावित हुए हैं इसलिए नारी और दलित समाज ही अक्सर उनकी रचनाओं के केंद्र में है। आज भी समाज में सबसे अधिक उत्पीड़ित दलित है उसमें भी सबसे अधिक दलित समाज की स्त्रियाँ हैं जो तिहरी मार से पीड़ित हैं। बेचैन साहब ने साहित्य सम्मेलनों में भाग लेने के लिए सूरीनाम, बैकुवर (कनाडा) हॉलेंड और ग्रेट ब्रिटेन जैसे देशों की साहित्यिक यात्राएँ भी की हैं। भारतीय सहन को भी -समाज एवं पाश्चात्य समाज की शिक्षा, रोजगार, रहनइन्होंने भली भाँति देखा है।

<u>जन्म तथा वंश:-</u>

श्यौराज सिंह बेचैन जी का जन्म ५ जनवरी १९६० को नदरोली, जिला-बदायूं उत्तर प्रदेश में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री राधेश्याम तथा माता का नाम श्रीमती सूरजमुखी था। पिता एक प्रसिद्ध जूता कारीगर थे। 'बेचैन' जी की आयु जब ४ वर्ष की थी तभी उनके पिता का देहांत हो गया। इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था के कारण केवल बालक श्यौराज के पिता की मृत्यु ही नहीं हुई, मृत्यु श्यौराज सिंह बेचैन के बाल सपनों की भी होती है। पुरुषों में बड़े बब्बा भगीरथ, छोटे गंगी और ताऊ बाबूराम तीनो नेत्रहीन थे। चौथे सदस्य लंगडे विद्याराम थे जिनका पैर बैलगाड़ी से टूट गया था।

माता -पिता:-

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी की माता का नाम सूरजमुखी और पिता का नाम राधेश्याम था। वह एक प्रसिद्ध जूता कारीगर थे। उनके पिताजी की अकाल मृत्यु होने के कारण इनकी माता जी ने दूसरा विवाह किया उनके दूसरे पिताजी का नाम रामलाल तथा तीसरे पिता का नाम भिखारी लाल था।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' के परिवार में दो भाई एक बहन थी। एक भाई रामभरोसे, दूसरा तेजसिंह था। बहन का नाम माया था। घर में सब उन्हें माया कहकर पुकारते थे। उनका एक सौतेला भाई भी था जिसका नाम रूपचंद था। जो भिखारीलाल की सन्तान था। माँ की मौत के समय उसकी लाश भी नहीं देख पाया। गया तो चिता की राख भी ठंडी हो गयी थी। कई दिनों तक माँ की राख के पास जाकर बैठा रहता था। अब अम्मा नहीं, मेरी कृतघ्न स्मृतियाँ मेरे साथ थी। सोचता हूँ कि क्या फ़र्ज अदायगी की थी?

बचपन:-

श्यौराज सिंह बेचैन जी के माता-पिता एक साधारण मेहनत मजदूरी करने वाले एक गरीब श्रमिक थे। उनके बाबा श्री भी एक कुशल चर्मकार थे। जिनकी छाप उनके पिताजी पर भी पड़ी थी। श्यौराज सिंह 'बेचैन' कबीरदास जी से काफी प्रभावित रहते थे। उन्हें गीता,भागवत पुराण,महाभारत आदि ग्रंथों की कथा अक्सर स्मरण रहती थी। जिसे वे कभी-कभी अपने पोते को सुनाया करते थे। इनके पिता तथा माता निरक्षर थे।

बेचैन जी के पिता की जब मृत्यु हुई तब उस समय उनकी उम्र ४-५ वर्ष की थी। छोटे भाई राम भरोसे का जन्म एक-दो सप्ताह पहले हुआ था और तेज सिंह सवा साल का था। माया ६ वर्ष की थी। श्यौराज मुर्दा मवेशी उठाना, नीबू बेचा, केले व अंडे, पेपर बेचता, बाल मजदूरी करता, सिर पर तसले ढोना राजगिरी करता है। बेगारी करता है। अपने अस्तित्व को बचाने के लिए अनेकों उपाय व श्रम करते हैं।

[ख]-: शिक्षा:-

श्यौराज सिंह बेचैन जी की माता और पिता दोनों अशिक्षित थे। पिता जी जीवन को चलाने के लिए पढ़ने की बजाए चर्मकार का काम करते थे।

इनका नंदरोली गाँव उस समय शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पिछड़ा हुआ था। जिसके कारण बेचैन जी को पढ़ने के लिए घर से बहुत दूर-दूर तक भटकना पड़ता था बेचैन जी के दादा बाबा सभी पूरे वृद्ध और दिव्यांग थे जिसकी वजह से उनके लिए पढ़ने की बजाए पेट पालना सबसे बड़ी लड़ाई थी। जिस लड़ाई को वे आजीवन संघर्ष के रूप में लड़ते रहे।

बेचैन जी के सौतेले पिता श्री भिखारी लाल ने सर्वप्रथम इनको प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश दिलाया था। जहाँ कुछ समय में श्यौराज सिंह बेचैन जी ने अक्षरों का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। दूसरा विद्यालय दिल्ली में सान्ध्य कालीन विद्यालय के रूप में कक्षा चार पुनः में इनको प्रवेश मिला, लेकिन पहले ही दिन लेट हो जाने के कारण इनका स्कूल छूट गया। जो उनके मौसा देवीदास ने करवाया था। प्रेमपाल सिंह ने इनका प्रवेश कक्षा छः में स्वामी पूर्णानंद माध्यमिक विद्यालय चिरौरी बुलंदशहर में करवाया जो इनके घर से लगभग २५ किलोमीटर दूर था।

कक्षा ९ में कविता पाठ करके इन्होंने ₹४० का पुरस्कार प्राप्त किया तथा कक्षा १११२ में बाल सभा- के अध्यक्ष भी रहे। इन्होंने एस. एम. कॉलेज चंदौसी से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की तथा स्नातक करने के पश्चात श्यौराज सिंह बेचैन के कदम रुके नहीं। इन्होंने अपना अध्ययन जारी रखते हुए एम.ए., बी. एड., नेट यूजीसी की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा पीएचडी एवं डी. लिट् भी किया। इन्होंने, हिंदी दलित पत्रकारिता पर पत्रकार अंबेडकर का प्रभाव' विषय पर वीरेन डंगवाल (संपादक अमर उजाला बरेली संस्करण) के निर्देशन में पीएचडी करने वाले प्रथम शोधकर्ता रहे। (लिम्का बुक आफ रिकार्ड १९९९ में दर्ज है) वर्तमान समय में इनकी रचनाएँ देश के कई विश्वविद्यालयों में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ्यक्रम में चुनी गई है।

<u>शैक्षिक अनुभव-:</u>

प्रो० श्यौराज सिंह बेचैन जी हिन्दी दलित साहित्य एवं नारी सहित्य के ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने बाल्यावस्था से ही अनेक कष्टकारी, कुरीतियों सामाजिक एवं राजनैतिक समस्याओं का सामना करते हुए भी अपने अध्ययन करने की प्रबल इच्छा को अपने भीतर संजोये रखा। जैसा कि पूर्व में लिखी गयी उनकी जीवन वृत्तान्त से स्पष्ट होता है कि उन्होंने पिता के अभाव में अनेक आर्थिक समस्याओं का सामना किया। जातीय भेद भाव को झेला।

शारीरिक कष्ट का भी इनको सामना करना पड़ा। फिर भी पढ़नेलिख-ने की इनकी जिज्ञासा कभी भी कम नहीं हुई, बल्कि दिनप्रतिदिन -वह बढ़ती ही गयी। अत: एम. ए. बी.एड., नेट, पी० एच० डी०, डी० लिट् जैसी सम्माननीय डिग्रियों को इन्होंने प्राप्त किया। इनकी प्रतिभा का असर ही है कि इन्होंने एक नहीं बल्कि अनेक शिक्षण संस्थानों में अध्यापन कार्य किया। इनके शैक्षिक अनुभवों को निम्नलिखित प्रकार से देखा जा सकता है:-

-:टी०जी०टी० अध्यापक (वरिष्ठ बाल विद्यालय दिल्ली प्रशासन):-

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने दिल्ली प्रशासन के अन्तर्गत टी० जी० टी० की परीक्षा को उत्तीर्ण किया एवं वरिष्ठ बालविद्यालय दिल्ली में प्रवक्ता के रूप में १९ सितम्बर १९८९ से १७ दिसम्बर १९९६ तक शैक्षणिक कार्य का सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

-:पी० जी० टी० अध्यापक (वरिष्ठ बाल विद्यालय दिल्ली प्रशासन):-

प्रो० श्यौराज सिंह बेचैन जी ने बड़े परिश्रम से प्रवक्ता के रूप में अपना कार्यभार सम्भाला। उनको आगे और उच्च पदों पर शैक्षणिक कार्य करने की बहुत अभिलाषा थी। अतः उन्होंने दिल्ली प्रशासन द्वारा आयोजित पी० जी०टी० परीक्षा के माध्यम से हिन्दी विषय के प्रवक्ता पद पर नियुक्ति प्राप्त की और इन्होंने पी० जी०टी० (प्रवक्ता) हिन्दी विषय के रूप में १७-दिसम्बर-१९९६ से लेकर १५-अक्टूबर-१९९७ तक अपने पद पर कर्तव्यों का बहुत अच्छी तरह से निर्वहन किया प्रवक्ता के रूप में उन्होंने विद्यालय की सेवाओं के साथ-साथ इनका साहित्य के प्रति लगाव भी निरन्तर बना रहा और ये रचनाएँ साहित्य जगत को उपलब्ध कराते रहे हैं।

-: एसोसिएट प्रोफेसर (डा० भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय दिल्ली):-

श्यौराज सिंह बेचैन जी के शैक्षणिक अनुभवों में उनकी प्रतिभा अधिक प्रमुख रही है। उन्होंने खुद को पी० जी० टी० (प्रवक्ता) पद तक ही सीमित नहीं रखा। अतः आगे उच्च शिक्षा के लिए भी उन्होंने काफी हद तक निरन्तर कठिन परिश्रम भी किया जिसके परिणाम स्वरूप दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के अन्तर्गत डा० भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय दिल्ली में १६

दिसम्बर १९९७ को उन्होंने एसोसिएट प्रोफेसर का पद प्राप्त किया। १६ दिसम्बर १९९७ से १२ फरवरी २०१० तक अपने कर्तव्यो का यहाँ निर्वहन किया।

-:प्रोफेसर (दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली):-

श्यौराज सिंह बेचैन जी एसोसिएट प्रोफ़ेसर के रूप में कार्यभार को संभालते हुए भी अपने साहित्य सृजन को निरन्तर गति प्रदान करते रहे हैं। इनकी साहित्यिक प्रतिभा को देखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के साक्षात्कार में इनको प्रोफेसर के पद पर कार्यभार ग्रहण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जो कि इनके अनुभव के आधार पर मिला। तब से लेकर अब तक हिन्दी विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। उनके माध्यम से अनेक देश-विदेश के छात्र-छात्राएं अपने अध्ययन क्षेत्र में निरंतर लाभान्वित हो रहे है। सितम्बर 2020 से हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष भी रहे हैं। जो पहले दलित हिन्दी विभागाध्यक्ष कहे जा सकते हैं।

ग-:- विवाह:

श्यौराज सिंह बेचैन ने १९९० में रजत रानी आर्य से वैज्ञानिक विचार केंद्र चंदौसी में बिना दहेज विवाह किया था। उस समय मीनू जी ने एम. ए., बी. एड. तक पढ़ाई की थी। विवाह के उपरांत बेचैन द्वारा जे. एन. यू. में मीनू को एम. फिल. कराई गई थी। उस समय बेचैन की बेटी अजातिका का जन्म हो चुका था और पति - पत्नी रोजगार के लिए संघर्ष कर रहे थे। उन्हीं दिनों बेचैन जी दिल्ली में सहायक अध्यापक भी हो गए थे।

"सम्यक भारत में साक्षात्कार के दौरान रजत रानी मीनू ने बताया था कि हमारी शादी के कार्ड क्या पैंपलेट छापे गए थे, जिसमें शादी के प्रतीकों, प्रदर्शनों, दहेज इत्यादि का खुलकर विरोध किया गया था। साथ ही कार्ड में एक नोट यह भी छपवाया था कि " कृपया अपने साथ कोई उपहार न लाएं। केंद्र सार्वजनिक समारोह आयोजित कर जोड़े को मात्र सहजीवन की सपथ दिलवाता और वे एक दूसरे के गले में फूलों की माला डालते थे। मित्रों रिश्तेदारों को सामूहिक भोज की व्यवस्था की जाती थी।"[1]

सम्यक् भारत में दिए गए साक्षात्कार में रजत रानी मीनू ने बताया था कि-- "खैर हमारी लव और अरेंज संयुक्त मैरिज हुई थी। श्यौराज और हमारे बीच

जान - पहचान से एक दूसरे को पसंद करने लगे। पता ही नहीं चला हमसे ज्यादा हमारे पापा श्यौराज के सामाजिक रुझान और प्रतिभा से प्रभावित थे।"[2]

परिवार-:

श्यौराज सिंह बेचैन जी का पूरा परिवार पूर्ण रूप से अशिक्षित एवं सुविधाओं से परे रहा है। इनके परिवार के लिए तो पेट पालना ही मुश्किल था। जब परिवार की ऐसी परिस्थिति हो फिर तो पढ़ना- लिखना तो कोसों दूर हो जाता है। इनकी पढ़ने की जिद के आगे मां ने इनसे कहा कि मेरा एक बेटा ही नहीं है मां का ऐसा कहना ही खुद मुश्किलों को बयान करता है। बेचैन जी की बेटी अजातिका सिंह एक टीवी चैनल में कार्यरत है। लड़का आयुष कम्पनी में मेनेजर का कार्य कर रहा है।

श्यौराजसिंह 'बेचैन' जी की पत्नी का नाम रजत रानी 'मीनू' है। जो दिल्ली विश्वविद्यालय के अधीन कमला नेहरू कालेज में हिन्दी की प्राध्यापिका है। 'हिंदी दलित कथा-साहित्य' में प्रमुख नाम है। दलित कथा-साहित्य में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। कथा-साहित्य के साथ-साथ वे बहुत अच्छी कविताएँ भी रचती है। वे अच्छी कवियत्रि भी है। 'नवें दशक की हिन्दी दलित कविता' नाम से उनकी कविताएँ छपी है। इसके अलावा भी बहुत सारे पत्र-पत्रिकाओं में भी लेख प्रकाशित हुए हैं। डॉ रजतरानी 'मीनू' एम. फिल., पी.एच.डी., पोस्ट - डॉक्टरल रिसर्च अवार्ड मिला। जो वर्तमान में एसोसिएट प्रोफेसर है।

"हाल ही में वाणी प्रकाशन से 'हम कौन हैं?' कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ है। दलित दखल का सह-संपादन भी आपने किया है। हिंदी पत्रिका 'आउटलुक' मार्च 2012 सर्वे में आपको टॉप तीन कवियों की श्रेणी में शामिल किया। इस अंक में आपकी कविता 'पिता भी तो होते हैं मां', प्रकाशित है जिसे बहुसंख्यक पाठकों ने पसंद किया।"[3]

श्यौराजसिंह 'बेचैन' जी के परिवार में एक बेटा और बेटी है। आज उनका एक छोटा एवं सुखी परिवार है। श्यौराज सिंह बेचैन जी का परिवार एक सफल परिवार है। वे सदैव साहित्य सेवा में सक्रिय रहते हैं। समाज की आवाज को तत्परता से पाठकों के समक्ष रखते हैं। आज इस दंपति की चर्चा

दलित, नारी साहित्य एवं समाज में अग्रणीय है। समाज में डॉ. अम्बेडकर के सपनों को चरितार्थ करने के लिए इनका दिल दिमाग चिंतन में व्यतीत होता है। क्योंकि वह अपनी चेतना के निर्माण में अंबेडकर के प्रभाव को बहुत अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं। युगीन यथार्थ को देखने के बाद दलितों के प्रति चेतना भरने के लिए बेचैन जी को लिखने के लिए कबीर, रविदास, डॉ. भीमराव अंबेडकर, ज्योतिबा फुले, संत गाडसे, नारायण गुरु, ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूरजपाल चौहान, मोहनदास, नैमिशराय आदि ने प्रेरित किया। ये सभी लेखक के लेखन के प्रेरणास्रोत रहे हैं।

उन्हें अछूतानंद और डॉक्टर धर्मवीर के चिंतन के प्रति भी विशेष लगाव रहा है। श्यौराज सिंह बेचैन दलित एवं नारी साहित्य के दावेदार लेखक, कवि, अंबेडकरवादी विचारक साहित्य साधक है। उनकी आत्मकथा 'मेरा बचपन मेर कंधों पर प्रकाशन साहित्य की दुनिया में अच्छी-खासी हलचल पैदा कर दी आत्मकथा के प्रकाशन से पूर्व आधा दर्जन पुरस्कार प्राप्त कर चुकी थी जिसका अनुवाद मराठी में रेखा देशपांडे, पंजाबी में बलबीर माधोपुरी ने की है। फ्रेंच में अन्ना और अंग्रेजी में डॉक्टर तपन बोस आदि कर रहे हैं। जर्मन अनुवाद नेपाल की रिसर्च स्कॉलर अलका कलाल ने जर्मन में रहकर इनकी आत्मकथा का अनुवाद किया। उनका अभी उर्दू, मलयालम, कन्नड़, तेलुगु और गुजराती में काम चल रहा है जो शीघ्र ही प्रकाशित होने की संभावना है।

प्रो. कालीचरण स्नेही जी उन्हें 'प्रेरणा का पावर हाउस' ऐसे ही नहीं कहते हैं। यह आत्मकथा भारतीय दलित परिवारों में पल रहे तमाम अभाव ग्रस्त बच्चों का प्रतिनिधित्व करती हुई आत्मकथा है। जब उनके पिता का देहांत हुआ तो उस समय बालक बेचैन जी की उम्र मात्र चार वर्ष की थी। तब से दसवीं पास कर लेने तक का सफर उनके त्याग, बलिदान, संघर्ष एवं साहस ने जिजीविषा के प्रति इनके अन्दर एक ऐसी भावना जागृत कर दी है कि अब भारतीय दलित परिवारों का यथार्थ इनकी रचनाओं में खुद साकार होता है। वे कबीर की भांति घुमक्कड़ एवं फ़क्कड़ व्यक्तित्व की माँग करने लगते हैं। ये अपनी अल्पायु में ही तमाम अच्छाइयों बुराइयों से अवगत हो चुके हैं। समाज की असलियत अगर कोई कवि, लेखक या विचारक के रूप में देखना चाहता है तो उसके वे जीते जागते उदाहरण बेचैन जी हैं।

पशु प्रेमी:--

एक संस्मरण में बेटी अजातिका सिंह बताती है कि वह जानवरों से बहुत प्यार करते थे। घर पर एक स्ट्रीट डॉग जो एक बदसूरत दिखने वाली छोटी सी कुतिया थी, जो किसी त्वचा की बीमारी से पीड़ित थी। पापा उसे खिलाते-पिलाते थे; लेकिन हम लोग उसे छूने से भी हिचकीचाते थे लेकिन पापा जी उसे कई बार सहलाया करते थे। एक दिन पापा घर पर नहीं थे। तब वह बीमार पड़ गई और मर गई। पापा जब घर आए तो हम लोगों एवं मम्मी पर बहुत नाराज हुए।

पत्र-पत्रिकाओं में लेख:-

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी ने सन् १९८५ में लेखन क्षेत्र में पदार्पण किया। सभी भारतीय प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी रचना 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' प्रकाशित होने वाली पत्रिका हंस में 'वे वक्त गुजर गया माली तथा 'यहाँ एक मोची रहता था' शीर्षक से कहानी प्रकाशित हुई। उनकी रचनाएँ हंस, दिनमान, न्यायचक्र, नवभारत टाईम्स, कथादेश, जनसत्ता,बयान, पक्षधर, अपेक्षा, अमर उजाला, दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा, आदि समाचार पत्रों में छपती हैं और हिंदी पत्रकारिता में 'दलित उवाच' निबंध संग्रह (१९०७),'हिंदी की दलित पत्रकारिता पर पत्रकार अंबेडकर का प्रभाव'(१९९८) 'स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका' (२००९) 'मेरा बचपन इनके कंधों पर' (२००९)। बेचैन जी की अनेक कहानियां एवं रचनाएं समय-समय पर प्रकशित हुई हैं। अपेक्षा, अमर उजाला, भास्कर (१९८७) राष्ट्रीय सहारा, सत्ता विमर्श और दलित, हंस के प्रथम दलित विशेषांक के अतिथि संपादक, साप्ताहिक हिंदुस्तान आदि में प्रकाशित होती रहती हैं उनकी कुछ कहानियां आकाशवाणी द्वारा भी प्रकाशित होती रही हैं जिनमें सबसे चर्चित कहानी संग्रह 'भरोसे की बहन' है जो राजनीति के परिदृश्य पर कटाक्ष करती है तथा ये हंस के दलित विशेषांक के संपादक भी रहे हैं।

छंदोबद्ध रुचि :-

श्यौराज सिंह बेचैन जी की कविताओं में रुचि रही है इसलिए इनके कई कविता संग्रह प्रकाशित हुए हैं उनकी रचना लेखन ही सच्चे अर्थों में पूजा

अर्चना है। पाठक को ऐसा महसूस होता है कि ये आधी आबादी की आवाज को धार देने का कार्य करते हैं वे किसी धर्म, संप्रदाय या पार्टी से बंध कर नहीं रहते हैं बल्कि ये मनुष्यता और मानवता के प्रखर समर्थक हैं। उनकी रचनाओं की प्रतिबद्धता व्यक्ति के सम्मान, बंधुत्व, मानव अधिकारों आदि का है समाज की स्थिति, पात्र, घटनाएं सभी हृदय को विह्वल करती है तो उसी की परिणिति साहित्य में लेखन के रूप में आती है।

स्वभाव वैशिष्ट्य :-

अपने भाव को जानना ही स्वभाव है। मनुष्य के लिए अपने आपको पहचाना बहुत ही मुश्किल कार्य है जो व्यक्ति खुद को जानता या पहचानता है उसे ही सच्चा मनुष्य माना जाता है। मनुष्य में विद्यमान गुण दोषों को परखना ही स्वभाव कहलाता है लेकिन बेचैन जी ने स्वयं अपने आपको पहचाना है। उनके स्वभाव की कुछ विशेषताएं हैं बेचैन जी ने अपने परिवेश तथा समाज की समस्याओं को अपनी रचनाओं में बखूबी वर्णन किया और समाज को चित्रित करने का प्रयास भी किया है यही स्वभाव आगे चलकर उनकी पहचान बन जाती है। रचनाकार की तरह उनकी रचनाओं में यह झलकता रहता है कि वह विभिन्न पत्रों-पत्रिकाओं के माध्यम से अपने स्वभाव को अपनी रचनओ में व्यक्त करते रहते हैं।

दलित साहित्यकार परिस्थिति के साथ-साथ स्वयं को बदलता है। डॉ भीमराव अंबेडकर के प्रयास से समाज में दलित और स्त्री की स्वतंत्रता को बलवती करने का पूरा का पूरा श्रेय बाबासाहेब को ही जाता है। उन्हीं को अपना प्रेरणास्रोत मान करके बेचैन जी का साहित्य सृजन शुरू होता है। जब नारी को राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन से समानता,स्वतंत्रता,सम्मान,लिंग-भेद के लिए संगठित प्रयास किया गया। तब बड़ी संख्या में दलित समाज एवं नारी समाज राष्ट्र और अपनी मुक्ति के लिए एकत्रित होकर घर से बाहर निकल कर अपनी आवाज को बुलंद किया। तब अपनी परिस्थिति के साथ खुद को बदल लिया उनमें मानसिक बदलाव भी आया और उन्हें यथार्थ बोध का भी ज्ञान प्राप्त हुआ कि बिना सामाजिक, राजनीतिक चेतना के समानता, स्वतंत्रता, सम्मान के अधिकार की बात अधूरी है।

उन्हीं में से एक तेजस्वी व्यक्तिव एवं संघर्षशील कवि, लेखक बेचैन जी भी दिखाई देते हैं उन्होंने अपने संघर्ष एवं समाज की कड़वी सच्चाई को अपनी आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' रच कर पूरे साहित्य जगत को झकझोर कर रख दिया। भारतीय समाज में दलित एवं स्त्री जाति को वे एक पहचान दिलाने के लिए कोशिश की है। उनके जीवन की सार्थकता को एक महत्वपूर्ण अंग मानकर उन्होंने कार्य किया है। इनका जीवन बहुत ही कष्टमय बीता था जिसके माध्यम से संपूर्ण दलित समाज का दर्द बनकर उनके लेखन के रूप में समाहित हुआ जो उनकी रचनाओं में सहजता से परिलक्षित होता है। उन्होंने बड़ी सहजता और सरलता के साथ भारतीय समाज की आधी आबादी को केंद्र में रखकर उनके अधिकारों की मांग की आवाज को बुलंद किया है।

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने अपने स्वयं के अनुभव या आप बीती को समाज के सामने लाकर दलित समाज एवं स्त्री समाज को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए जगरुक किया है। आज भी हमारा समाज शिक्षा, रोजगार, अधिकार, सम्मान से कोसों दूर है। जो आजादी हमको आज प्राप्त है वह सिर्फ एक छलावा के सिवा और कुछ भी नहीं है। समाज आज भी छुआछूत, जाति-पात,भेदभाव के संकीर्ण विचारों से स्वतंत्र नहीं हो पाया है। आज भले ही कहा जाता है, कि सभी लोग समान हैं किसी के साथ भेदभाव नहीं हो रहा है लेकिन सच्चाई यह है कि ७२ वर्षों के बाद भी समाज में संकीर्णता का प्रतिशत आज भी ज्यों का त्यों उसी स्थान पर ठहरा हुआ है। जिसके उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

उत्तराखंड में भोजन माता सुनीता देवी एवं दलित खिलाड़ी बन्दना कटारिया के साथ जो हुआ वह 21वी सदी की भारतीय संस्कृति को मुँह चिढ़ाता है। आज गुजरात में राजकोट क्षेत्र के एक दलित व्यक्ति एक सवर्ण लड़की से शादी कर लेता है तो उसे जान देकर उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। वही मध्य प्रदेश, उत्तर-प्रदेश, राजस्थान में, बलिया में सवर्ण के खेत में काम करने के बदले भाई- बहन को निर्वस्त्र करके घुमाया जाता है। जबकि आज 'बेटी- बचाओ और बेटी-पढ़ाओ' की चर्चा समाज में चारों ओर हो रही है। लेकिन उसी भारत में हाथरस में एक दलित लड़की की रेप करके आधी रात में अधिकारियों के सामने पेट्रोल डाल कर जला दिया जाता है। यह कहाँ का न्याय है? आज भी कुछ स्थानों पर दूल्हा घोड़ी पर सवार होकर बरात

लेकर नहीं जा पाता है। उसके लिए सारे समाज को उसकी कीमत चुकानी पड़ती है। दलित समाज का जीवन बहुत ही कष्टमय है राजस्थान में पति के सामने ही उसकी पत्नी की आबरू को लोग लूट लेते हैं तो कोई भी मानव अधिकार उनकी बातों को स्वीकार नहीं करता है। यह सिर्फ कहने की बात है कि सभी लोग समान हैं। सभी कानून की नजरों में बराबर है। यह नारा समाज को भ्रमित करने के लिए है जबकि सच्चाई इससे कोसों दूर है। राजनीति में राजनीतिज्ञ लोगों को नके वोट चाहिए लेकिन उनके साथ समानता एवं न्याय की बात कहना कोसो दूर है। जबकि दलित के घर मुख्यमन्त्री एवं सांसद भी भोजन करते हैं तो थाली बर्तन साथ लेकर आते हैं।

भारतीय मीडिया के सालाना २२५ अरब के कारोबार में लगभग ६ लाख नौकरियों में दलितों की संख्या नगण्य है। उनका कहना है कि गहराई से देखें तो १७ करोड़ दलित के बीच १७ दलित के नाम मुख्यधारा में नहीं है। यह कहां की आजादी है? भाई यह सिर्फ हाथी के दांत के समान हैं जो दिखाने के और खाने के और हैं। वाइस चांसलर कितने हैं? प्रोफेसर कितने हैं? पत्रकार कितने हैं? संपादक कितने हैं? हीरो कितने हैं? अभिनेता कितने हैं? नेता कितने हैं? उद्योगपति कितने हैं? तो सारे क्षेत्र खाली पड़े हैं। आरक्षण से कुछ लोग आईएएस, आईपीएस और पीसीएस बन गए हैं इसमें से 17 करोड़ जनता में बदलाव कैसे होगा? कुछ लाख दो लाख नौकरियों से करोड़ों लोगों का क्या भला हुआ है? शायद यह प्रमाण काफ होगा, समझने समझाने के लिए। जल, जंगल, जमीन उनसे छीन लिया गया। मकान उनके पास नहीं है, खाने को नहीं है उद्योग धंधे में कुछ करने नहीं दिया जाता तो यह अत्याचार और उत्पीड़न का सिलसिला बहुत पुराना है। अब आप सहज ही कल्पना करसकते है। आजादी के बाद यह सब हो रहा है।

मुझे ऐसा लगता है कि दसवीं जिन हालातों में की गई। वह किसी पी.एच.डी. डि.लीट या आई.ए.एस., पी.सी.एस परीक्षा से भी भारी या कष्टदायक थी।

-: बाह्यजीवन :-

'बेचैन' जी ने उत्तर प्रदेश के एक बहुत ही पिछड़े हुए गाँव नदरोली बदायूं में जन्म लिया था इनके पूर्वज चर्मकार का काम किया करते थे। मुर्दा मवेशी उठाना चमड़ा उतारना उसको शुद्ध करके उपयोग की चीजें बनाना। यह सब काम हुआ करता था। उनके घर; लेकिन ऐसी दुर्घटना घटी जिसमें

उनके बचपन को एक संकट कालीन स्थिति में डाल दिया। मसलन जब ये लगभग चार-पांच वर्ष के थे। उसी समय इनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। उनकी मां अशिक्षित थी इनके बाबा का एक पैर टूट चुका था। उनके और उनके ताऊ भी नेत्रहीन थे। ऐसी स्थिति में ये बेघर हो गए और उसी समय से उनकी यात्रा दूसरों के सहारे चलनी शुरू होनी थी, सो अपने ही कन्धो से शुरू हो गयी।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी का बचपन रूपी जीवन उनके कंधों पर शुरू होता है वह इसलिए कि पालन-पोषण के लिए लेखक के घर की बहुत ही दयनीय स्थिति थी। इन्होंने समाज में जिस संघर्ष एवं दुर्व्यवहार को झेल कर अपने अध्ययन को जारी रखा, उसके कारण उनका बचपन उसी आपाधापी में कब गुजर गया उन्हें ये भी पता नहीं चला। इनका कोई एक निश्चित ठौर ठिकाना ना होने के कारण इनकी जीवन रूपी नाव सदैव समुद्र में बिना पतवार की अपने विवेक से चलती रहती है हवा जिस दिशा में बहता है। नाव की चाल भी उसी दिशा में हो जाती है। उनके जीवन का प्रमुख प्रभाव उनके साहित्य और जीवन दोनों पर पड़ा है। ये बचपन में बिना किसी प्रशिक्षण के और बिना किसी गुरु के सनिध्य में कविता करने लगे थे। वे अपने परिवेश, वातावरण एवं अनुभव से कविताएँ लिखते जा रहे थे।

लेखक कहते हैं कि-- "मैं विद्यार्थी था और विद्यार्थी भी कैसा था? कि बालश्रम के क्रम से विद्यार्थी बना था। मैं बचपन में १९६८ मैं ही दिल्ली आ गया था। मौसा-मौसी के पास रहकर कभी नींबू बेच कर, कभी अंडे बेचते हुए तो, कभी अखबार डालते हुए, मैंने गा-गा कर अपनी कविता शुरू की। बाहर रहकर शिक्षा ग्रहण करना, खुले वातावरण से सीखना तो मिल गया, उससे सीखते रहना और अनौपचारिक शिक्षा की तरह पढ़ना। यह सब बाल संघर्ष का दौर था। उस समय किसी निश्चित विचारधारा में बँध कर कोई कविता करना संभव न था। स्वभाविक जो मन में आता था या अनुभव से निकलता था वह लिख लिया करता था। लेकिन जब मैं कक्षा आठ का विद्यार्थी था उसी समय मेरे भाई नत्थू लाल जी ने दिल्ली के कई लेखकों से मेरा परिचय करवाया था। उर्दू के शायरों ने मुझे बहुत प्रभावित किया कैफ़ी आज़मी, साहिर लुधियानवी ये सभी मेरे दिल दिमाग पर छा जाने लगे। रेडियो पर सुनने को मिलते। उनके गीत मुझे खींचकर अपनी तरफ करते गए।"[4]

डॉ. भीमराव अंबेडकर के प्रभाव उनके ऊपर ज्यादा था कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आलोचना, कविता आदि विधाओं का प्रभाव उनके साहित्य में है। बेचैन जी एक आधुनिक कवि एवं चेतना संपन्न लेखक भी हैं उनके साहित्य में अन्य विधाओं के माध्यम से भी दलित और स्त्री संवेदना तथा दलित नारी जीवन का वर्णन विस्तृत रूप में किया गया है। अतः इनकी रचनाओं में हमें एक सशक्त भारत की कल्पना रहती है जो एक तरह से समता, स्वतंत्रता बंधुत्व एवं भाईचारे की बात करता है जिसमें सभी समाज के लोगों को जीवन जीने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। भारत के गाँव में जिनके पास जमीन नहीं है। शहरों में उद्योग नहीं है तो वे भी आर्थिक दृष्टि से प्रताड़ित हैं उपेक्षित है माली हालत खराब है और सामाजिक दृष्टि से वे कोई एक पान की दुकान तक नहीं खोल सकते क्योंकि कोई पान लेगा ही नहीं तो फिर उनका जीवन कैसे चलेगा? समाज में ऊंच-नीच छुआछूत, जाति- पाती के भेदभाव से भरे समाज के बीच उससे जूझते दलित एवं नारी जाति की जो स्थिति है। लेखक महोदय ने उसे भली-भांति उकेरा है इन्हीं विचारों के कारण उनका दलित साहित्य में विशेष महत्व है।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी बचपन में रेडियो पर संगीत सुनकर कविताएं लिखा करते थे। वह हिंदी एवं संस्कृत के विद्यार्थी थे। बचपन में वे आर्य समाज को मानते थे। साथ ही वे मार्क्सवादी विचारों से भी प्रभावित थे लेकिन जब शिक्षा का असली ज्ञान उन्हें हुआ तो मार्क्सवादी एवं आर्य समाज के विचार को छोड़कर मानवतावादी होकर लेखन कार्य करने लगे तथा भारत की आधी आबादी के हक और अधिकार को धार देना उन्होंने शुरू किया।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी का बाह्य व्यक्तित्व देखते ही वह हमें अपनी ओर आकर्षित करता है। वे हमेशा कुछ न कुछ सोचते ही रहते हैं। वे बहुत ही साहसी और जुझारुं व्यक्तित्व वाले व्यक्ति है। एक बार जो काम हाथ में वे ले लेते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते है।

<u>आकार-:</u>

श्यौराज सिंह 'बेचैन' लम्बे-चौड़े सांवले शरीर वाले बेहद मिलनसार स्वभाव के इन्सान है। 'बेचैन' साहब को किताबों में छपी फोटों में देखा था, परंतु जब साक्षात उनसे मिलना हुआ तो मैं उनको देखता ही रह गया। उनका मिलना मुझ पर एक गहरा प्रभाव छोड़ गया। इतनी उम्र में भी वह स्फूर्ति लिए रहते

हैं। गाना गुन गुनाना उन्हें बहुत ही अच्छा लगता है। सिर्फ पुराने गानों के ही नहीं वे नए गानों के भी बहुत शौकीन है। गानों के साथ जब गाड़ी चलाते हुए मस्ती में होते हैं तो उनका एक बहुत ही अलग अंदाज देखने को मिलता है। इनका एक अलग ही व्यक्तित्व दिखलाई देता है। वे छोटे-बड़े कोई भी काम कर सकते है। ऐसे में उनके व्यक्तित्व के कई रंग दिखते हैं। साहित्यकार हैं, वे अध्यापक हैं, वे, दिल के स्तर पर बेहद ही व्यवहारिक और अपनत्व के भावों से भरे हुए व्यक्ति हैं वे। इसी कारण राजेन्द्र यादव उन्हें 'दोस्तनवाज इंसान' कहते हैं। बेहद जुझारु, मेहनती, साहसी और आत्मविश्वासी हैं।

श्यौराज सिंह बेचैन विचार के स्तर पर बेहद स्पष्ट हैं। दलित साहित्य को लेकर उनका अपना एक नजरिया है, जिसकी वजह से कुछ लोग उनसे परेशान भी रहते है। व्यक्तिगत स्तर पर श्यौराज जी बेहद खुश मिजाज इंसान हैं और जोशीले इतने कि जो काम एक बार मन में ठान लें, तो उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। उनका यही जोश उन्हें घोर विपन्नता से बाहर निकाल कर प्रोफेसर के पद तक ले जाता है।

<u>रहन-सहन:-</u>

श्यौराजसिंह 'बेचैन' जी अपने परिवार के साथ सुखपूर्वक एक सफ़ल जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वे आम्बेडकरवादी विचारधारा रखने वाले व्यक्ति है तथा इसी विचारधारा के साथ अपने रहन सहन को बनाए हुए हैं।

<u>दिनचर्या:-</u>

श्यौराजसिंह 'बेचैन' जी भोर में जल्दी ५.०० बजे उठ जाते हैं। शौच आदि क्रिया करने के बाद घुमने के लिए निकल जाते है। वहाँ से लौटने के पश्चात सुबह में चाय के साथ अखबार पढ़ते हैं। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह प्रतिदिन चार समाचार पत्र लेते हैं और उनका अध्ययन करके अपने आपको अपडेट रखते हैं। चाय पीते-पीते समाचार पत्र में दी गई सारी खबरें वह पढ़ लेते हैं। उसके बाद तैयार होकर विश्वविद्यलय के लिए निकल पड़ते है। शाम के समय घर वापस आते हैं। बच्चों एवं पत्नी के संग बातें करते हैं फ़िर सभी साथ में खाना खाते है खाने के बाद वह अपने लेखन के काम में जुट जाते हैं। वह कुछ न कुछ हमेशा पढ़ते ही रहते हैं। दिनभर काम में इतना व्यस्त रहते हैं। फिर भी पढ़ने के लिए रोज़ समय निकाल ही लेते हैं।

-: आन्तरिक जीवन :-

वेशभूषा एवं आचार व्यवहार:-

श्यौराजसिंह 'बेचैन' जी कपड़े प्रसंगानुरूप धारण करते है। ज्यादातर वे पेन्ट शर्ट एवं कोट पहनते है परन्तु कभी कभी शूट भी पहन लिया करते है। वे मिलनसार स्वभाव के व्यक्ति है। सभी के साथ वे अच्छा व्यवहार करते हैं। शोधार्थी उनकी आत्मकथा को पढ़कर ही उनके ऊपर पी.एचडी करने के लिए विवश हो गया और जब उनसे मिला तो खुद पर विश्वास नहीं हो रहा था कि उनका व्यक्तित्व इतना सरल है।

धार्मिकता:-

श्यौराजसिंह 'बेचैन' जी जब छोटे थे। तब देवी-देवता और भूत प्रेत में विश्वास रखते थे। धार्मिकता के नाम पर पहले चामुण्डा देवी को बहुत मानते थे परन्तु पढ़ाई के बाद वे धीरे-धीरे गौतम बुद्ध की विचारधारा से प्रभावित हुए और उन्हीं के उद्देश्य पर चलने लगे। अम्बेडकरवादी विचारधारा के तहत वे अब किसी देवी-देवता में नहीं विश्वास नही रखते है।

बेचैन जी का व्यक्तित्व बहुमुखी है। किसी भी लेखक या साहित्यकार का व्यक्तित्व अंकित करना कोई सरल कार्य नहीं है। उनके व्यक्तित्व को साकार करते समय जन्म, परिवेश,शिक्षा, संस्कार, पद-सम्मान, व्यक्तित्व का प्रधान-गुण, सामाजिक परिवेश तथा अन्य बातों को उजागर करने का प्रयास किया गया है। जिससे उनके व्यक्तित्व का पता चल जाता है।

एक साक्षात्कार में रजत रानी मीनू ने बताया था कि - "वे व्यवहार में स्त्री समर्थक ही रहे अपनी छोटी बहन मनोरमा को उन्होंने उस वक्त अपने साथ रख कर पढ़ाया जब वे खुद बेरोजगार थे। पति और पत्नी में स्वामी और दासी का रिश्ता ना मानकर मित्रता, एक दूसरे के प्रति प्यार और सम्मान की बात करते थे।"[5]

"हाँ उनकी 'कन्विंसिंग पावर' जबरदस्त है। उस स्थिति में मैं उनकी बात को टाल नहीं पाती हूं। उन्होंने मुझे हमेशा पढ़ने लिखने की प्रेरणा दी। वह हमें सभा सम्मेलनों में साथ ले जाते थे कुछ पढ़ो लिखो आगे बढ़ो की बात ही की है घर में माहौल भी दिया है यह उनका सबसे उज्ज्वल पक्ष है।"[6]

"अनुकूल माहौल भी दिया है उनका मानना है कि किसी भी कीमत पर पढ़ो-लिखो चाहे बाकी काम अधूरे क्यों ना पड़े रहें।"[7]

<u>राजनैतिक कार्यकर्ता-:</u>

प्रो० श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी बचपन में अक्सर राजनैतिक कार्यकर्ता के रूप में भी सक्रिय रहते हैं जनता के सामने अपने काव्यमय विचारों को प्रकट करने में श्यौराज सिंह जी एक सफ़ल व्यक्ति है। उनकी राजनैतिक विचारधाराओं के सम्बन्ध में कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित है।

श्यौराज सिंह बेचैन एक प्रतिबद्ध राजनैतिक कार्यकर्ता भी रहे है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान आन्दोलन में लम्बे समय से ये पुरी तरह से सक्रिय रहे है। चौधरी महेन्द्र सिंह टिकैट के किसान संघर्षों में ग्रामीण समाज की वंचित जातियों और भूमिहीन मजदूरों की भूमिका को सुनिश्चित करने और इस प्रकार के आन्दोलन को दिशा हीन होने से बचाने में उनकी एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे बचपन में आर्य समाजी भी रहे हैं तथा मार्क्सवादि विचारों से प्रभावित होकर कार्य किया था।...नई फसल उनके उसी राजनैतिक व्यक्तित्व की रचनात्मक अभिव्यक्ति है।

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि श्यौराज सिंह बेचैन जी के भीतर गाँव के किसान मजदूरों के लिए सहनुभुति एवं सद्भाव है अथवा किसानों , मजदूरों, दलितों के हित सिद्ध करने के लिए एक राजनैतिक लड़ाई भी इन्होंने लड़ी थी। युवावस्था में जो कार्य मैं कर सकता था। अब वह कार्य नहीं कर पा रहा हूँ उसका मुझे खेद है।

<u>[ड़]-:- सामाजिक परिवेश:</u>

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी माना गया है। बिना समाज के मनुष्य की कल्पना करना सम्भव नहीं है। बेचैन जी अपने सहित्य में समाज की वास्तविक तस्वीर को प्रस्तुत करते हैं। वे स्वयं समाज का एक प्रतिनिधित्व करते है। एक व्यक्ति की भूमिका में अक्सर उपस्थित रहते हैं उन्होंने दलित आदिवासी एवं नारी की पीड़ा को विस्तृत फलक पर अपनी रचनाओं में वर्णन किया है। उन्होंने अपनी लेखनी में उन सबको चित्रित किया जो प्राय सहित्यकारों की नजरों में नहीं आते हैं। दलित, पीड़ित,आदिवासी, शोषित आदि पात्रों को साहित्य के केन्द्र में उन्होंने स्थापित किया है।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी नई कविताएं लिखते हुए छात्र जीवन से ही लोगों के बीच में प्रसिद्ध होने लगे, उसी समय यानी छात्र जीवन से ही ये बाल सभा के अध्यक्ष रहे और उसके पश्चात जब चंदौसी में वे स्नातक करने ग़ए तो 'ऑल इंडिया स्टूडेंट फेडरेशन' के जिला कमेटी के अध्यक्ष पद पर उन्होंने कार्यभार सम्भाला और उसी दौरान मिर्जापुर में एक मुशायरा हुआ जिसमें कैफी आज़मी, अली सरदार, जाफरी आदि हस्तियां भी उपस्थिति थीं। "मुझे एक छात्र के रूप में कविता करने का अवसर मिला इससे पहले अपने कालेज के एक कवि सम्मेलन में एक छोटी कविता सुनाई थी लेकिन उससे लगा कि बात अधिक दूर तक नहीं गई, अखबारों में लेखन का काम छात्र जीवन से ही शुरू हुआ। पत्रिकाओं में मेरी कविताओं का छपना भी उसी समय से शुरू हुआ। किसान आंदोलन की यूनियन और दलित आंदोलन में भी कार्य किया। उसी के साथ सफाई मजदूरी के लिए शोषित समाज संघर्ष समिति की स्थापना करके वहाँ के वाल्मीकि नौजवानों को जोड़ा। कई बार ऐसी स्थितियां आई थी जहाँ जोखिम था। उस समय जोखिम उठा लेने के जज्बे के बारे में मैं खुद हैरान हूं कि मैं क्या था? और आज कैसा हूं? क्या होता चला जा रहा हूं। उसके बाद मेरे गीत संग्रह 'नई फसल' 'फूलन की बारहमासी' आने शुरू हुए। दलित विमर्श या दलित साहित्य १९८७ के आसपास शुरू हुआ था। उससे पहले मैं मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित था।"[8]

<u>सामाजिक कार्य:-</u>

प्रो० श्यौराज सिंह बेचैन जी ने समाज में व्याप्त असमानता को समाप्त करने के लिए विद्यार्थी जीवन से ही सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते रहे। विद्यार्थी अवस्था से अर्थात् बी० ए०, एम० ए० करते समय से ही श्यौराज सिंह जी के अन्दर सामाजिक बुराइयों को नष्ट करने की भावना प्रबल रूप से उभरती थी। इस विषय में 'नई फसल' कविता संग्रह की भूमिका में कवि की पंक्तियों में देखा जा सकता है।

नई फसल में इनके असंख्य गीत कविताएँ उन दिनों की उपज है जिन दिनों में वे चन्दौसी से एस० एम० कालेज से बी० ए० करने के साथ-साथ छात्रों, किसानों और दलितों के बीच सार्वकालिक सामजिक कार्यकर्ता के रूप में एक बेहतर सपना लेकर काम कर रहा था। बेचैन जी मार्क्सवादी

विचार धारा से भी प्रभावित थे। बाद में वे उससे निराश होकर उन्होंने अम्बेडकर के सिद्धान्त को आत्मसात् किया।

इस प्रकार एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में श्यौराज सिंह बेचैन जी दलित समाज में जाग्रति पैदा करने में अधिक से अधिक प्रयास करते रहते थे। किसानों के और छात्रों के बीच में अपनी विचारधारा को रखते और समयानुकूल स्वकविताओं को भी सबके समक्ष प्रस्तुत करते रहते थे। अपनी काव्यमय विचार धारा के द्वारा बेचैन जी ने समाज को एक सम्यक नई विचार धरा प्रदान की है।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी की सामाजिक स्थिति के साथ-साथ आर्थिक परिवेश बहुत ही दयनीय थी। बाद में धीरे-धीरे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक स्थिति में सुधार आना शुरू हुआ। उनकी आर्थिक स्थिति तो बहुत खराब थी सामाजिक परिवेश में सभी प्रकार के लोग जुड़ गए थे। बुद्धि जीवी, प्रबुद्ध लोगों से लेकर समाज के सबसे निचले स्तर से लेकर उच्च साधन संपन्न वर्ग के लोगों से उनका संबंध था। उन्होंने समाज की सबसे पीड़ित प्रताड़ित शोषित लोगों की समस्याओं को साहित्य स्तर पर लाना शुरू किया। उसके साथ - साथ निराकरण की जोरदार वकालत भी करते है।

[ब]-:- कृतित्व :

सत्तर- अस्सी दशक के आधुनिक हिंदी साहित्य में दलित सहित्यकारों में श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी का एक अलग ही स्थान था। इनका साहित्य विविध विधाओं में वर्णित है। जिससे हमें उनकी एक बहुमुखी पहचान उनके साहित्य में दिखाई देती है जो आत्मकथा से लेकर यात्रा-साहित्य, कहानी, उपन्यास, कविता आदि विधाओं के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है। निबंध संग्रह, लेख संग्रह आलोचना। इनकी प्रसिद्ध कहानी संग्रह, कविता संग्रह, निबंध संग्रह, आलोचना, उपन्यास रचनाओ की सूची इस प्रकार है:-

[क]:- कहानी संग्रह:-

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी का लेखन कार्य पत्र-पत्रिकाओं से प्रकाशित होना आरम्भ हुआ था। करीब दस-बारह वर्ष पहले श्यौराज सिंह ‘बेचैन’ का कहानी संग्रह ‘भरोसे की बहन’ (2010) वाणी प्रकाशन से प्रकाशित होकर आया था। दूसरा कहानी संग्रह उसके करीब दस साल बाद ‘मेरी प्रिय कहानियाँ’

(2019) शीर्षक से राजपाल एण्ड सन्स, प्रकाशन से प्रकाशित होकर आया है। तब से लेकर अब तक इनका लेखन कार्य निरंतर जारी रहा है। इसी तरह उनकी अब तक लगभग ३० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। उनकी आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' का कई भाषाओं में अनुवाद भी किया जा चुका है। उनकी कहानियों तथा आत्मकथा को कई विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित भी कर लिया गया है। उन्होंनेअपनी कहानियों में शहरी परिवेश तथा ग्रामीण परिवेश में दलित और निम्न वर्गीय नारी की कथा के विविध रूपों को उन्होंने दर्शाने का बहुत ही सुन्दर प्रयास किया है।

' भरोसे की बहन '

संग्रह में जितनी भी कहानी है वह भी एक से बढ़कर एक है। उसमें से सभी समाज के लिए उपयोगी एवं शिक्षक समाज एवं प्रमुख लोगों से सवाल भी करती है कि क्या हम स्वतंत्र भारत में समता स्वतंत्रता एवं बंधुता के साथ रहते हैं? यह हमारी संस्कृति के आदर्श सिर्फ कहने या बताने के लिए है। आदर सम्मान मान मर्यादा सब जाति में ही समाहित होता है व्यक्ति ज्ञान से नहीं बल्कि जाति के कारण बड़ा या महान माना जाता है। उसी परंपरा का समाज आज भी पालन कर रहा है।

मेरी ये कहानियाँ अधिकांशतया समसामयिक समस्याओं मुद्दों और सामाजिक सरोकारों से संबद्ध है। सामाजिक लोकतंत्र की भावना और अवसरों की समानता मेरी सृजनशीलता में निहित रही है। पिछले जन्म और अगले जन्म के बजाय मैं इसी दुनिया के यथार्थ का चितेरा रहा हूँ। यह मेरे लेखन की उद्देश्यता खुली और स्पष्ट है।

भरोसी की बहन कहानी संग्रह में कुल 10 कहानियां संग्रहित हैं उसमें जो कहानी शोधार्थी को सबसे ज्यादा दिल को छू जाती है। मेरे शीर्षक से संबंधित है उसमें कहानी 'शोध प्रबंध' की नायिका रीना है जो समाज में वर्तमान समय में शिक्षण संस्थान में जिस अन्याय एवं अत्याचार का सामना उन्हें करना पड़ता है। उसका बिल्कुल सही चित्रण 'बेचैन' के द्वारा किया गया है। यहाँ यह बात ध्यान देने वाली है कि यह शोषण सभी महिलाओं के साथ होता है। मात्रात्मक रुप से कम या ज्यादा जाति के आधार पर हो सकता है लेकिन सभी का होता है। यह कहानी भारतीय शिक्षण संस्थान में किस तरह का वातावरण है उसके जीते- जागते उदाहरण से यह आपका परिचय कराता

है। किस तरह शिक्षा का आदर्श अब तहस-नहस होने के रास्ते पर चल पड़ा है। प्रो. प्रताप सिंह का चरित्र अब गुरु शिष्य से कलंक में बदल गया है।

संग्रह की दूसरी कहानी 'क्या करे लड़की ' में समाज की ज्वलंत समस्या को केंद्र में रखा गया है क्योंकि स्कूल गोइंग टाइम में बच्चे जातिवाद के भेदभाव को भूल कर प्रेम के मार्ग पर चलकर समाज को बदलने का प्रयास करते हैं लेकिन रूढ़िवादी समाज आज भी बदलने के लिए कतई तैयार नहीं है जिसका परिणाम आँनर किलिंग जैसी घटनाओं से अखबार भरे पड़े हैं। जबकि भारतीय संविधान सभी को प्रेम, सौहार्द, सम्मान के साथ रहने का समान अवसर देता है लेकिन समाज के शत्रु लोग ऐसा नहीं होने देते हैं जिस कारण भी समाज में एकता व अखंडता की नींव कमजोर पड़ रही है। कीर्ति ने सही निर्णय लिया था लेकिन माता-पिता के दबाव में वह अपने प्रेमी सत्यपाल से विवाह न करके अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर लेती है। ऐसी घटनाएं समाज को कुछ सोचने के लिए विवश करती है और समाज से प्रश्न करती है कि हम 21वीं सदी में है या मनुस्मृति काल में रह रहे हैं?

संग्रह की तीसरी कहानी ' संदेश ' भी मुझे काफी प्रभावित एवं विचलित करती है। इस कारण उस कहानी की चर्चा करना मैं आवश्यक समझता हूं। समाज में जब कोई लड़की अपनी जाति के लड़के से शादी या प्रेम न करके दूसरी जाति की लड़की कर लेती है तो समाज में उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है? यह किसी व्यक्ति से छिपा नहीं है। कहानी का नायक भीम सिंह किस तरह से समाज से बगावत करके, दूसरे जाति की विनीता से शादी करके उसे पढ़ा लिखा कर अधिकारी बना देता है लेकिन वही विनीता बाद में पद प्रतिष्ठा के कारण भीमसेन से अलग होकर उसका ही विनाश करने की सोचती है। मुझे इस कहानी से जो सीख मिलती है वह यह है कि शादी विवाह अपने वर्ग में होना चाहिए क्योंकि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग के लोग अधिकारी होने पर सवर्ण जाति की महिलाओं से शादी करने के बाद ऐसा ही परिणाम देखने में आता है। आज समाज में अनेकों शीतल के सपने टूट रहे हैं। जो देश के लिए उचित नही कहा जा सकता है।

संग्रह की चौथी कहानी 'भरोसे की बहन' कहानी मेरे बहुत करीब है। ऐसा इसलिए क्योंकि अनपढ़ रामकली को समाज में घटने वाली घटनाओं ने ही उसे यह अनुभव प्रदान किया है। राम भरोसे जैसे अनगिनत युवा आज भी

राजनीति के चक्कर में पड़ कर अपने काम धंधे एवं पढ़ाई से विमुक्त होकर कोरी कल्पना में जीने लगते हैं। यह कहानी समाज को संदेश देती है कि राजनीति सामान्य लोगों के बस की बात नहीं है। यह सीख रामकली के द्वारा दिया जाता है जिससे प्रभावित होकर ही संग्रह का नाम 'भरोसे की बहन' रखा गया है। ऐसा मुझे प्रतीत होता है।

कवि बिहारी के बारे में एक बात कही जाती है कि :--

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।

देखन में छोटन लगै, घाव करै गंभीर॥

प्रस्तुत संग्रह में जिन कहानियों को जगह दिया गया है वे सभी एक से बढ़कर एक है। जो समाज में चल रही समस्याओं को जोरदार तरीके से उठाती है। कोई भी कहानी अप्रसांगिक नहीं है। बेचैन जी ने जितनी भी कहानियां लिखी है। वह सभी समय से संवाद करती नजर आती है। कहानियों के जो पात्र हैं। वे जीवन के अनुभव से सभी बेजोड़ है।

संग्रह की पांचवी कहानी 'शीतल के सपने' कहानी भी अनाथ, दलित एवं गरीब परिवार के टूटते सपनों को श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने जुबान दी है क्योंकि भारत की आधी आबादी की आर्थिक दशा कमोबेस शीतल के समान है जिसे पढ़ने लिखने का अवसर नहीं मिल पाता। जिस कारण झोपड़ी में सूरज का प्रकाश नहीं पहुंच पाता, वहां हमेशा अंधेरा ही छाया रहता है। यह कहानी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, तथा पिछड़ा वर्ग की बेटियों की पीड़ा को बयान करता है।

' मेरी प्रिय कहानियां '

इस संग्रह में कुल 9 कहानियां संकलित है। इन कहानियों में जो कहानी शोधार्थी को ज्यादा प्रभावित करती है। उसमें 'शिष्या - बहू' है। इस कहानी की नायिका गुलाबो जो गैर दलित लड़के से प्यार करके शादी कर लेती है और आरक्षण के तहत अधिकारी बन जाती है। वह समाज का भला न करके गैर दलित का भला करती है जिससे दलित समाज ठगा सा महसूस करता है। कहानी के माध्यम से समसामयिक समस्याओं को उठाता है। किस कदर

शिक्षण संस्थाएं भी अब दूषित हो गई हैं। रोहित वेमुला, पायल तड़वी, जितेंद्र मेघवाल जैसे बच्चे शिक्षण संस्थाओं में उनका शोषण किया जाता है। गुलाबो खुद अपनी सास एवं साइंस की अध्यापिका विद्या शर्मा के द्वारा उत्पीड़ित होती है।

संग्रह की दूसरी कहानी ' बस इत्ती सी बात ' कहानी समाज में घटित होने वाली ऑनर-किलिग पर आधारित है। ऐसा इसलिए क्योंकि आज भी सवर्ण समाज अपनी बेटी का विवाह किसी भी जाति में कर सकता है लेकिन वह चमार भंगी आदि से नहीं कर सकता है। भले ही बेटी विधवा रहे। यह उसे मंजूर है। कहानी की नायिका कीर्ति जब पुन: विवाह दलित समाज के लड़के रतनलाल से कर लेती है तो उसका पूर्व पति ठाकुर कुँवर सिंह मर्डर कर देता है। आज भी सवर्ण समाज में महिलाएं सिर्फ गर्दन हिलाया करती है। जैसे ही उसने पति के प्रश्नों का जवाब दिया पति उसे तलाक दे देता है। दलित समाज में महिलाओं का पुनः विवाद कर दिया जाता है लेकिन इस रूढ़िवादी परंपरा-वादी समाज में पुनर्विवाह करने की आजादी के बाद भी मुश्किल है क्योंकि पुरुष पत्नी की मृत्यु पर विवाह कर सकता है लेकिन महिलाएं ऐसा नहीं कर सकती हैं। पुरुष महिलाओं को आजादी देने के पक्ष में नहीं है। कुंवर सिंह यह बात बड़े गर्व के साथ कहता है।

संग्रह की तीसरी कहानी 'सिस्टर' है। प्रस्तुत कहानी की नायिका सिस्टर की जब शादी पाल चचा से हुई थी। सुहागरात के दिन ही पाल चचा ने उसे त्याग दिया था क्योंकि सिस्टर ने मजाक में कहा मैं तुम्हारी सिस्टर हूं। यह बात पाल चचा को लग गई और उन्होंने उसे त्याग दिया। जब सिस्टर घर आती है तो उसकी माता ने बहुत डांटा था। जब कभी सिस्टर की पुन:र्विवाह की बात चलती है। तो शादी करने वाले पूछने लगते कि पहले वाले ने क्यों छोड़ा था? उसने तुम्हें छोड़ा था या तुमने उसे छोड़ा था? ऐसे कितने ही सवाल सिस्टर से पूछे जाते थे। तो अंत में सन्यास लूं पर वहाँ साध्वियाँ भी जाति पूछ रही थी। हिन्दू धर्म में प्रवेश भी जाति के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। सो वहाँ से चुपचाप दबे पाँव उठ आई और पादरी बन गयी। श्यौराज सिंह बेचैन यह दिखाना चाहते हैं कि पुरुष प्रधान समाज में पुरुष दो-तीन विवाह कर सकता है लेकिन महिलाएं ऐसा नहीं कर पाती हैं। पाल चचा ने दूसरा विवाह किया जो दो साल रहकर खुद छोड़ कर चली गयी। वही सिस्टर का पुन: विवाह भी नहीं हुआ और पादरी बनने पर विवश हो गयी। आज भी धर्म की नजर में

महिलाएं दोयम दर्जे की प्राणी है। ऐसा भारतीय धर्मों में दिखाई देता है।

संग्रह की चौथी कहानी 'कलावती' है। कहानी की नायिका कलावती है। उसके पति 47 साल पहले गुजर गए थे। उसके पाँच बच्चे थे। उसका घर कच्ची मिट्टी का बना था। उसके बेटे रमेश की अचानक मृत्यु हो गई थी। उसके बाद अशोक की मृत्यु हो गई। बेटियों में चंद्रवती, निहाल देई और किरन थी।

कहानी की नायिका कलावती की दशा श्यौराज सिंह बेचैन की माँ के समान थी। वह पुनः विवाह नहीं करती। गरीबी कंगी में इस दुनिया को अलविदा कह दिया। समाज में सरकारी योजनाओं का जो हाल है। वह किसी से छिपा नहीं है। सरकारी योजनाओं का लाभ गरीब तक पहुंच ही नहीं पाता जो वास्तव में उसका हकदार होता है। लेकिन वह भ्रष्टाचार की बली पहले ही चढ़ जाता है। भले ही देश की बड़ी संसद में उसकी चर्चा हो असल में वह ढाक के तीन पात के समान हो जाता है।

'हाथ तो उग ही आते हैं'

प्रस्तुत कहानी संग्रह में नौ कहानियां संकलित है। इस संग्रह का नाम भी बहुत प्रभावशाली रहा है क्योंकि लेखक के शब्दों में कहें तो समाज में बहुत सारे एकलव्य जैसे कितनों के हाथ गुरुओं द्वारा काटे गए हैं लेकिन पाश्चात्य देशों में तकनीक के सहारे अब लोगों के कटे हुए हाथों को जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। हमारे देश में हक, अधिकार एवं शिक्षा के बदले हाथ काटे जा रहे हैं। घर और जमीनों पर दबंग हिंदू कब्जा करते हैं। यह दलितों को मारने पीटने आतंकित करने वाले कोई विदेशी आकांता अथवा अंग्रेज नहीं है, चीनी नहीं है, पाकिस्तानी भी नहीं है बल्कि यह पूर्व स्वदेशी हैं। देश की सेवा में लगे हुए हाथों का अगर यही हाल होगा तो समाज में खुशहाली, भाईचारा और शांति, प्रगति का वातावरण कैसे बनेगा? संविधान में दिए गए जीवन सुरक्षा, समानता और स्वतंत्रता के अधिकारों का क्या होगा? क्या हिंदू समाज दलित के प्रति मुसलमानों और ईसाइयों जैसा सहयोगी और उदार कभी नहीं बनेगा? हाथ तो उग ही आते हैं' की कल्पना प्रतीकात्मक थी। वह एक आशावादी सांकेतिक आश्वस्ती भी थी।

शीर्षक का नामकरण मैं अपनी पत्रकार बेटी अजातिका सिंह के सुझाव पर किया है कि किस तरह एक अश्वेत बच्चे के कटे दोनों हाथ को श्वेत डॉक्टर ने उसके हाथ जोड़ दिया था। वहीं से यह शीर्षक जेहन में आया था। कहानी संग्रह की पहली कहानी "हाथ तो उग ही आते हैं" की नायिका रुक्खो है जो सूता चौधरिन के घर पर चूल्हा चौका का कार्य करती है। दुर्भाग्य से गाँव में हिंदू-मुस्लिम में दंगा होने के कारण पति की हत्या कर दी जाती है और वह किसी तरह जान बचाकर गाँव छोड़कर शहर में आ जाती है। घरों में झाड़ू पोछा का काम करने लगती है।

यहाँ लेखक यह बताने का प्रयास करता है कि ऊंच-नीच जाति-पाती का भेदभाव करने में महिलाओं में यह गुण ज्यादा पाया जाता है। जैसे एक कहावत बहुत ही प्रसिद्ध है कि जाति की बैरी जाति ही होती है। उसी तरह का व्यवहार सूता चौधरिन का भी है जो जाति- पाती करके ही काम देती है। चौधरिन के घर में ही उनके लड़के द्वारा रुक्खो के बेटे का हाथ टूट जाता है। जिसका इलाज कराने के बाद भी उसका हाथ काट दिया जाता है। यह बात रुक्खो से छिपाई जाती है और कहां जाता है कि अब तो कटे हुए हाथ भी उगते हैं जिससे माँ का धैर्य बना रहे। इसी कारण संग्रह का नाम हाथ तो उग ही आते हैं रखा गया है।

संग्रह की दूसरी कहानी 'आग और फूँस' है जिसकी नायिका सरवती शर्मा और नायक दाताराम है। दाताराम सरवती का ससुर है जबकि सरवती उसकी बहू है। एक दिन सरवती दाताराम को दोपहर का लंच देने के लिए खेत पर जाती है। उसी समय मौसम खराब होने के कारण दाताराम घर जल्दी आ जाता है लेकिन रास्ते में कहीं भी सरवती नहीं दिखती है। तो वह पुन: लौटकर खेत की ओर जाता है। जहाँ सरवती के साथ गाँव के सवर्ण लड़कों ने गैंग रेप करके अधमरा छोड़ा था। उसे घर लाकर उपचार किया और वह शीघ्र ही स्वस्थ को जाती है। दाताराम उसकी दूसरी शादी करना चाहता है लेकिन वह साफ-साफ मना कर देती है। एक बूढ़ा है तो दूसरा जवान है एक आग है तो दूसरा फूंस है जो कभी भी नष्ट हो सकता है फिर भी सरवती ने विवाह ना करने का कठोर निर्णय लिया था।

यहाँ बेचैन जी समाज को सीख देना चाहते हैं कि महिलाओं के साथ जो यौन अपराध पुरुषों द्वारा किया जाता है। उससे महिलाएं अपवित्र

नहीं होती है क्योंकि कोई बलात्कारी किसी नारी की पवित्रता छीन सकता है क्या? क्या पवित्रता, चारित्रिकता और मोरल देह के आवरण है, जो उन्हें नोच ले गया, लूट ले गया और तुमसे जीने का मकसद छीन ले गया? मैं कहता हूँ कि ऐसा नहीं है, बिल्कुल नहीं है। तुम डर कर यूँ मर कर तो जालिमों के हौसले ही बढ़ाओगी।

आज समाज में महिलाओं के साथ जो शोषण अत्याचार हो रहा है उसका कारण यही है कि महिलाएं खुद को अपराधी मानकर आत्महत्या कर लेती है। लेकिन सरवती, फूलन देवी जैसी महिलाएं अत्याचार के कारण जीवन को नष्ट नहीं करती बल्कि उनको सबक सिखाने के लिए दुर्गा के समान राक्षसों का दमन करती है।

आगे चलकर यही दाताराम और सरवती ने नि:शुल्क 'ज्ञानदान' नामक शिक्षण संस्थान खोला और बहुत सारे बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। जिससे समाज में शिक्षा रूपी ज्योति का प्रकाश गरीब घरों में पहुंचना शुरू हो गया। जो कार्य ज्योतिबा फुले एवं माता सावित्रीबाई फुले ने किया था। उसी महान कार्य को ये दोनों आग और फूँस ने भी शुरू कर दिया। जिससे समाज में शिक्षा रूपी ज्योति सभी गरीब तबकों में पहुंचना शुरू हुआ। यह दुर्भाग्य की बात है जिस ज्योति को महात्मा फूले एवं सावित्रीबाई ने शुरू किया। उन्हें वह सम्मान आज तक नहीं मिला जो उन्हें मिलना चाहिए था।

संग्रह की तीसरी कहानी 'हमशक्ल' है जो मुझे सबसे ज्यादा आकर्षित एवं प्रभावित करती है। उसका वर्णन यहाँ किया जा रहा है कहानी का मुख्य पात्र प्रेमराय और कर्मदास है जिसमें नौकर मालिक का रिश्ता है। प्रेमराय की पत्नी 'सवली' को जन्म दिया। ठीक उसी दिन कर्मदास की पत्नी धर्मों ने भोरवती को जन्म दिया था। संयोग से दोनों बालिकाएं सवली और भोरवती हमशक्ल थी। प्रेमराय परम विलासी व्यक्ति था। दो- दो बीवियों का सुख भोग चुका था और एक तीसरी बीवी जो उसकी बेटी की उम्र की थी उससे उसका विवाह हुआ। प्रेमराय का बेटा प्रकेश नारी का पक्षधर है तो उसकी पत्नी माधुरी पूरी तरह नारीवादी है। शरीर पर पति के अधिकार को अपनी आजादी पर कुठाराघात समझती है।

शोधार्थी की दृष्टि से यह कहानी नहीं बल्कि एक लघु उपन्यास माना जा सकता है क्योंकि इसका फलक बहुत विस्तृत है। बहुत सारे प्रश्नों को

जगह दी गई है। सबसे प्रभावित चरित्र माधवी का है जो एक पढ़ी-लिखी सुशिक्षित नारी की भूमिका में हमारे सामने आती है। जो प्रश्नों के द्वारा पुरुष समाज को निरंतर करुण कर देती है। वह चाहे उसका पति प्रकेश ही क्यों न हो? माधवी के प्रश्नों को सुनकर प्रेमराय एवं प्रकेश दोनों के पसीने छूटने लगते हैं। सही सही उत्तर दोनो को मुश्किल हो जाता है। कर्मदास जिस घर में बंधुआ मजदूर है। उसी के घर में उसकी पत्नी धर्मों और बेटी भोरवती दोनों का शोषण प्रेमराय एवं उसका बेटा प्रकेश जो भोरवती को ट्यूशन भी पढ़ाता और करता है। वह कॉलेज से वापस लौटते समय गायब हो जाती है।

प्रकेश और उसका साथी फरमान अली, स्वयं हित शर्मा और बुद्धा खटिक ये सभी मिलकर भोरवती का अपहरण करके उसके साथ गैंग रेप करके उसकी हत्या कर देते है। चुनाव में ये सभी उसको खोजने की बात करते हैं। इस घटना के माध्यम से राजनेताओं के चरित्र का उद्घाटन भी किया है। किस तरह भंवरी देवी जैसी कि महिलाओं का उत्पीड़न राजनेताओं द्वारा आज भी किया जाता रहा है। जो सुबह से शाम तक समाज सेवा की आड़ में बहू बेटियों की आबरू तार - तार करते रहते हैं इस तरह राजनीति के दोहरे चरित्र से पाठकों को आगाह किया है।

संग्रह की चौथी कहानी 'घुंघट हटा था क्या?' है जो शोधार्थी को प्रभावित करती है। कहानी की नायिका लाडो ग्यारहवीं की छात्रा थी और उसका पति बलाधीन 50 साल का पाठा था। गरीब लाडो के पिता सदाराम फूल सी कोमल बच्ची की शादी बलाधीन जैसे पहलवान के साथ कर देते हैं। जहाँ सुख समृद्धि अर्थात् भौतिक सुखों की भरमार थी लेकिन यह शादी बेमेल थी। एक तरह से मानो भेड़िया बकरी झपटने जंगल से गाँव में घुस आया है। औरत के गुण कौन देखता है? सब कसाई की तरह मांस चमड़ी देखे हैं तनिक गोरी चमड़ी देखी और लार टपकने लगी।

यहाँ लेखक पुरुष जाति का बहुत ही स्वाभाविक गुणों का वर्णन किया है। पुरुष अपने निजी हित के लिए कुछ भी कर सकता है। वह किसी की समस्या या मजबूरी को महत्व नहीं देता है। प्रस्तुत कहानी में एक पात्र बच्चू है जो लाडो की उम्र का ही है लेकिन वह कभी जीते जी मालकिन का मुंह नहीं देख पाता है। जब लाडो प्रसव पीड़ा से मर जाती है तो। वह मालिक बलाधीन से पूछता है कि 'घुंघट हटा था क्या?' अर्थात सवर्ण घरों में महिलाओं को

आजादी कम होती है। सवर्ण समाज से इतर वर्ग में महिलाओं को बहुत आजादी रहती है। प्रसव पीड़ा में भी लाडो को अस्पताल नहीं ले जाया जाता जिसके परिणाम स्वरूप देरी के कारण लाडो की मृत्यु हो जाती है। जिसे उचित नहीं कहा जा सकता है। लाडो की सुंदरता का बखान महिलाओं द्वारा सुनकर बच्चू की इच्छा लाडो को देखने की प्रबल हो रही थी। लेकिन बलाधीन मालिक के द्वारा किसी से बात करना है तो पर्दा हटा कर बात करने की इजाज़त नहीं है क्योंकि बलाधीन अपने कुमेल विवाह के एहसास से आशंकित थे। नीची जातियों के नौकरों, सेवकों आदि से जमींदारों की स्त्रियों के अक्सर अवैध संबंध बन जाते हैं इसलिए वह बच्चू को लेकर अतिरिक्त सावधानी बरत रहा था।

"पिछले जन्म और अगले जन्म के बजाय मैं इसी धरती, इसी दुनिया के यथार्थ का साक्षी रहा हूँ। बहिष्कृत और वंचित भारत के टूटते सपनों की कथा की चमक अभिव्यक्ति का कलात्मक रूप क्या और कैसे बना है? यह तो पाठक वर्ग तय करेंगे मैं क्या कहूँ?"[9]

श्यौराज सिंह बेचैन कि दस कहानियों का संकलन 'भरोसे की बहन' के नाम से प्रकाशित हो चुका है यह एक अर्थ में भारतीय समाज के पिछले तीन दशकों का समाजशास्त्र माना जा सकता है। जहाँ धर्म, नीति, नैतिकता, पेशेवर, शिष्टाचार, धर्माचरण, मानवीय संबंधों का जो मूल्य है वे भाव सब के सब निरर्थक हो गए है। नागरिक जीवन, सामाजिक परिवेश, शासन व्यवस्था और जन सरोकारों के ताने-बाने में आदर्श स्थिति का अब कोई भी मानक बिल्कुल भी बचा नहीं है। जन जीवन के सारे ही क्रियाकलाप और व्यक्तित्व ये सब अब सभी के मन में एक संदेह उत्पन्न करते हैं। विगत तीन दशकों में साहित्यिक विमर्श के लिए जितने भी केंद्रीय विषय उभर कर हमारे सामने आए हैं। उसमें दलित एवं नारी विमर्श सर्व प्रमुख है। उसमें कथाकार बेचैन जी का दलित एवं नारी चिंतन अपनी गहरी संवेदना, सूक्ष्म परीक्षण शक्ति और ईमानदार सोच के कारण इस दौर के अन्य तमाम चिंतकों से बहुत ही भिन्न और अलग स्तर का प्रतीत होता है।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी का शीर्षक गौरतलब है 'मूल खोजो विवाद मिटेगा' 'अन्याय कोई परंपरा नहीं', 'अपने में परिपूर्ण' और 'सुविचारित' यह शीर्षक लेखक के लक्ष्य साधना की एकाग्रता को दर्शाता है। शोधार्थी

समझता है बेचैन जी का लेखन भटके हुए लोगों के लिए एक पथ प्रदर्शक का भी काम करेगा। क्योंकि इनका दलित एवं नारी चिंतन व्यवस्था की विसंगतियों की जड़ को तलाश करता है। यह सिर्फ शिकारी जवानों को खदेड़ने और गाली देने में अपनी उर्जा और समय का अपव्यय नहीं करता, अपितु यह उसके ध्येय निर्माण का भी कार्य करता है।

श्यौराज जी के कहानियों के नायक/नायिकाओं के समक्ष व्यवस्था जन्य विसंगतियां कई स्तरों पर हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं पर उनके पात्र क्रांतिकारी की तरह कहीं भी उत्साह में अपना सामर्थ्य जाया नहीं होने देते। वे सभी समय की नब्ज को बड़ी गंभीरता से पहचान कर निरन्तर आगे बढ़ते रहते हैं। जैसे 'भरोसे की बहन' की नायिका रामकली एक अशिक्षित महिला है लेकिन उसे व्यवहारिक ज्ञान बहुत अधिक है जब वह कहती है कि गरीब की कोई बैन- वैन नाय होती। अमीर को बहने राखी बांधे हैं। रामकली भारत देश की राजनीतिक व्यवस्था और दलितों की राजनीति करने वाले दलों की ऐसी तैसी कर देती है। यह कहानी बसपा की वह विशाल रैली है जिसमें असंख्य दलितों को जान से हाथ धोना पड़ा था। वह सत्य घटना इस कहानी के कथावस्तु का आधार मानी गयी है। 'शोध प्रबंध' कहानी में बेचैन जी ने न केवल गुरु संप्रदाय की निर्लज्जता को ही उजागर नहीं किया है बल्कि एक कदम आगे बढ़कर शिक्षक को भी शिक्षा देने का प्रयास किया है। कथानायिका रीना द्वारा अपने शोध निर्देशक की गोद में शोध प्रबंध की जगह अपना बच्चा रखकर उसे मजबूर कर देना, एक घटना मात्र नहीं है वस्तुतः यह ऐसा आचरण करने वालों के लिए चेतावनी और पीड़ित स्त्रियों के लिए एक बहुत अच्छी प्रेरणा भी है। "प्रसिद्ध लेखक कमलेश्वर जी के संपादन में प्रकाशित कालजयी कहानियों में मेरी 28 साल पहले छपी कहानी 'शोध प्रबंध' शामिल है। यह कालजयी कहानी इतनी जल्दी लोगों की स्मृतियों से ओझल होने वाली नहीं है।"[10]

गौरतलब है कि भारतीय सामाजिक ढांचे की विडंबना में दलित स्त्रियां तिहरा मार झेलती रहती है। एक दलित होने की, दूसरी स्त्री होने की तीसरी गरीब होने की। इस रचना में रीना जैसी कथानायिका तिहरी मार को झेलती हुई अपने संघर्ष में हमेशा दृढ़ रहती हुई प्रतीत होती है उनकी 'नॉन रिफंडेबल' कहानी शिक्षा जगत की व्यापारिक और नृसंस्ता के साथ-साथ इस तथ्य को भी सामने लाती है कि कॉन्वेंट पद्धति से भारत में चलाए जा रहे शिक्षा

व्यवसाय के समक्ष भारतीय नैतिकता, सादगी जैसी बातें केवल निरर्थक प्रलाप मात्र ही है। 'होनहार बच्चे', 'रावण' और 'ओल्ड एज होम' कहानी भारतीय सामाजिक परिवेश की स्पष्ट छवि हमारे सामने अंकित करती है। पंडित सदानंद तिवारी निर्वशिया चमार से अपने पुत्र का पिता बनने की गुहार लगाता हैं ताकि वो आरक्षण का लाभ प्राप्त करके नौकरी पा लें। मूल सिंह गाँव की रामलीला में रावण का किरदार करने के कारण सवर्ण उसे मार मारकर उसका चुरमा बना देते हैं। उसकी जमीन लेने के लिए गाँव की मिट्टी का वास्ता देकर प्रपंच गढ़ डालते हैं। 'ओल्डएज होम' कहनी में अमानवीयता की त्रासदी पाठक को और भी चौका देती है।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी की पारखी नजर से व्यंग बिलकुल भी बच नहीं पाता। मन में राम बगल में छुरी वाली कहावत समाज में किस तरह प्यार भरी बातें और सम्मानजनक बातें करतें पैरों से जमीन खींच ले जाती है। दलितों को वे हरियाली दिखालाते रहते हैं और घात लगाकर हमेशा के लिए दास बनाए रखने की जुगत करते रहते हैं। केवल आर्थिक ही नहीं सामाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से भी उन पर अपना वर्चस्व स्थापित रखने की अनोखी पहल। उसी तरह समाज का बंटाधार करती है इसका बेहतरीन और पर्याप्त उदाहरण इन कहानियों में विद्यमान है।

'बेचैन' की कहानी--'क्या करें लड़की' की नायिका-कीर्ति समाज की नृशंसता के दुष्चक्र के जाल में फंस जाती हैं। प्रेम जैसे पवित्र संबंध के नाम पर माँ-बाप, रिश्तेदार कितने नृशंस हो जाते हैं? यह ऐसा समाज है जहाँ प्रेम करने से प्रतिवर्ष सैकड़ों लोगों की हत्या होती है या हत्या कर दी जाती है। अंतरजातीय विवाह करने से इनकी इज्जत और सामाजिक हैसियत मिट्टी में मिल जाती है पर इन प्रेमियों की हत्या करवा देने से उनकी मान मर्यादा को चार चांद लग जाते है। ऐसा ही एक उदाहरण बदायूं के विधायक की पुत्री साक्षी का विवाह चमार जाति के लड़के अमितेश के साथ होने पर पूरा मीडिया महीनों तक उसकी चर्चा करता रहा है।

<u>कविता संग्रह:-</u>

1. भोर के अंधेरे में (कविता संग्रह) - श्यौराज सिंह 'बेचैन', वाणी प्रकाशन 2018.

2. चमार की चाय (कविता संग्रह) श्यौराज सिंह 'बेचैन', वाणी प्रकाशन, 2017.

3. 'क्रौंच हूँ मैं' (कविता संग्रह) श्यौराज सिंह 'बेचैन' हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा चयनित पांडुलिपि पर सहयोग सौजन्य से प्रकाशित इस काव्य संग्रह पर शोध कार्य हो चुके हैं और पांच कविताएं 'चेतना के स्वर' नामक पुस्तक में संग्रहीत होकर गढ़वाल विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के काव्य में पढ़ायी जा रही है। (सहयोग प्रकाशन 41. सहयोग अपार्टमेंट्स मयूर विहार फेज 1 दिल्ली-90). 1995.

4. नई फसल (कविता संग्रह) - श्यौराज सिंह 'बेचैन' के द्वारा किसानों दलितों के बीच लिखे गए सामाजिक गीतों और कविताओं का संग्रह है। इस संग्रह पर 1994-95 में जे. एन. यू के हिन्दी लघु शोध प्रबंध में आधार ग्रंथों में भी विवेचित हुआ है। (वाणी प्रकाशन-1988)

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी एक प्रसिद्ध सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ता हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान आंदोलन में ये लंबे समय से मुख्य रूप में सक्रिय रहे हैं। चौधरी महेंद्र सिंह 'टिकैत' के किसान संघर्षों में ग्रामीण समाज के वंचित जातियों और भूमिहीन मजदूरों की भूमिका को सुनिश्चित करने और इस प्रकार इस आंदोलन को संघी होने से बचाने में उनकी एक खामोश लेकिन महत्वपूर्ण भूमिका विद्यमान रही है। वे अपने पाठकों के बारे में बेचैन जी साफ लिखते हैं--"वे गाँव के किसान मजदूर हैं शहरों में पढ़े लिखे, अनपढ़, आजाद कहलाने वाले उत्पीड़ित तबकों के लोग कारीगर फैक्ट्री मजूर हैं।"[11]

'नई फसल' कविताओं में मेरे कई गीत और कविताएं उन दिनों की उपज है जिन दिनों में चंदौसी के एस. एस. कॉलेज से बी.ए. एम.ए.. करने के साथ छात्रों किसानों और दलितों के बीच सार्व-कालिक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में एक बेहतर सपना लेकर निरन्तर कार्य कर रहे थे। उन गीतों की

मांग अकादमिक दुनिया में प्रवेश करने पर भी हमेशा बनी रही पर मैं इस संग्रह के पुनः प्रकाशन के प्रति उदासीन बना रहा। कविताएं तो कमोवेश मैं लिख रहा था पर डायरियों में लिख कर छोड़ रहा था। सन् १९९५ में रजत रानी 'मीनू' के प्रयास से केदारनाथ सिंह के भूमिका लिखने के बाद वही संग्रह 'क्रौंच हूं मैं' शीर्षक से छपा था। दूसरे में मैं दलित मुद्दों की गंभीर बहस में शामिल होने लगा था। पत्र - पत्रिकाओं में लिखने लगा था। अमर उजाला, राष्ट्रीय सहारा, हिंदुस्तान, जनसत्ता, हंस आदि में रचनात्मक योगदान करने लगा। गद्य में मैं अखबारी लेखन के साथ-साथ काव्यात्मक लेखन में लग गया। दिल्ली आने के बाद मैं और अधिक लिखने लगा। अपने अनुभव के आधार पर आसपास की कहानियों को समेटने का प्रयास करने लगा।"[12]

"मैं कितना आश्वस्त रहता था की सभी विषमताएं हटेंगी और समाजवाद आएगा। 'नई फसल' में मेरा कवि हृदय वही तो गाया करता था। इन कविताओं के पीछे की कहानियां अनेक हैं। कई तो जीवन स्मृतियों का हिस्सा बन चुकी है मसलन साप्ताहिक दिनमान में उनकी एक सचित्र कविता छपी थी। उस अंक का अतिथि संपादन श्री हेमवती नंदन बहुगुणा ने किया था। उस पत्रिका की कीमत चुकाने के लिए उन्हें दसवीं का मूल प्रमाण पत्र तक गिरवी रखना पड़ा था। उसे मुस्लिम मित्र नूर नबी ने छुड़वाया था ऐसी परिस्थितियां विद्यार्थी जीवन में घट रही थी।"[13]

संग्रह के कई गीत कविताएं मंचों के अलावा रेडियो रामपुर, दिल्ली और शिमला रेडियो से भी प्रसारित होती रहती है। उसी समय वह किसान यूनियन के लिए दीवारों पर छोटी बहन मनोरमा के साथ पोस्टर चिपका रहे थे। मैं सस्वर गा रहा था- "नहीं रहे तो देश की दरिद्रता नहीं रहे, आदमी की आदमी से शत्रुता नहीं रहे। गरज यह है कि तृतीय विश्व युद्ध नहीं चाहिए, विश्व की वसुंधरा सुहागनी बनी रहे ।"[14]

"सरकार की ओर से उस समय दलित छात्रों को लगभग मात्र एक सवा रुपया रोज का वजीफा मिलता था। यह राशि उनके जैसे सर्वहारा के लिए एक मात्र मदद थी पर उसे भी कभी समय पर नहीं दिया जाता था। दलित को सरकारी दामाद कहकर वजीफा के खिलाफ रहते थे। हरिजन विभागों के दलित कर्मचारी भी कम भ्रष्ट नहीं होते थे। वे चक्कर पर चक्कर लगवा देते थे क्योंकि मैं रिश्वत नहीं देता था और वह मेरा वजीफा रोके रहते थे। सन १९८६

-८७ का स्कॉलरशिप अट्ठासी में जाकर मिला था तो मैं उसी पैसे से कविताओं की एक किताब मानसी प्रेस से निकलवाया था जिसका संपादक प्रेस स्वामी प्रदीप ही बन गया। नई फसल का मुरादाबाद के हिंदू कॉलेज में बकायदा लोकार्पण हुआ था। काव्य चर्चा का आयोजन भी हुआ था उसकी एक संक्षिप्त रपट संग्रह में दी जा रही है।"[15]

"उस वक्त का आयोजन उनके दो साथियों की वजह से सफल हो पाया था उसमें एक मुशर्रफ अली और दूसरे विजय आलम थे। विजय उनके लेखन को पहचान दिलाने में मदद कर रहा था। उसने उन दिनों अमर उजाला में उभरती प्रतिभा स्तंभ लिखना प्रारंभ किया था। उस श्रृंखला की एक कड़ी मुझे भी बनाया था। सहित्य क्षेत्र में मुझे जब भी जो भी पुरस्कार मिले उधर की जितनी भी सभाओं में मेरा जो भी व्याख्यान हुए विजय ने अमर उजाला के लिए हमेशा रिपोर्ट मंगाई और प्रकाशित की। उन दिनों दोनों से लगाव भी हो गया था। जब भी मुरादाबाद जाती तो दोनों के ही घर पर रुकता था।"[16]

भारत बहुजातीय देश है यहाँ सभी जातियों को सभी क्षेत्रों में जातिवार प्रतिनिधित्व मिलना ही चाहिए उसके बगैर सामाजिक लोकतंत्र आना बिल्कुल भी सम्भव नहीं है। उन दिनों की पत्र-पत्रिकाओं में छपी उनकी सारी कविताएं नई फसल में नहीं है। वह अलग से आनी बाकी है। इधर २००५-६ में डॉ विमल थोराट और डॉक्टर सूरज के आग्रह पर उन्होंने८ कविताएं भेजी जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुई और ना ही उनको उन्होंने वापस किया गया।

मैं तस्लीम करूंगा कि उन दिनों मैं उर्दू के तरक्की पसंद शायरों से बेहद प्रभावित था। साहिर लुधियानवी, फैज अहमद फैज, अली सरदार जाफरी, कैफ़ी आज़मी मेरे पसंदीदा शायर हुआ करते थे। हिंदी कविता में उन्हीं की वजह से रवानी छाई हुई लगती थी।

"बताना यह भी है कि उन दिनों प्रेम की कविताएं बड़े संकट में थी। भगवान दास शर्मा प्रेम पर लिखते ही उसे प्रति क्रांतिकारी घोषित कर देते थे। उधर दलित साहित्य में दिवंगत लेखक ओमप्रकाश वाल्मीकि मुझसे कहते थे- "मैंने दलित साहित्य लिखने से पहले की सारी प्रेम कविताएं नष्ट कर दी है। अब केवल दलित कविताएं ही लिखता हूं।" जबकि डॉ धर्मवीर ने दलित साहित्य की परिभाषा में प्रेम को भी शामिल कर दिया और कहा कि दलित

का पूरा जीवन है हंसना, रोना, प्रेम, घृणा आदि।"[17]

केदारनाथ सिंह 'बेचैन' के बारेमेंलिखतेहैं 'क्रौंच हूँ मैं' की भूमिका लिख रहा हूँ तो इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि युवा कवि के आग्रह को सहज ही नहीं भुला सकता। दूसरे अपने गुरु आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कथन की भूमिका लेखन एक प्रकार का मानवतावाद है तो मानव धर्म के नाते यह दो शब्द लिख रहा हूँ।

"जहाँ तक कवि की भाषा का सवाल है उसमें एक सहज खुलापन है जिसमें रचना कर्म पर रचनात्मक संभावना अधिक है। मुझे जिस खास बात ने आश्वस्त किया वह है कवि की वह क्षमता जिसके चलते वह छंदोबद्ध और लगभग छंद हीन दोनों प्रकार की कविताएँ लिखने में सफल है। जो छंदोबद्ध कविताएं हैं उनकी बनावट में भी खुलापन अधिक है और अनावश्यक कसाव कम, शायद यथार्थ की मांग भी यही है।-"[18]

शोषणकारी ताकतों और सत्ता तंत्र को तार-तार करने वाली कुटिल व्यंग्य और विद्रूपता से भरी बेचैन जी की कविता दृष्टि हिंदी कविता के परिदृश्य को नया आयाम देती है। लगभग गीतात्मक अनुभूतिपरकता उनकी कुछ कविताओं में रेखांकित करने योग्य हैं। यूं तो बेचैन जी के कवि कर्म को दलित कविता के संदर्भ में रखकर विचार किया जाना चाहिए तो शायद हम उनके रचनाकार व्यक्तित्व के प्रति गहरी आस्था और न्याय संगत ढंग से सहानुभूति पूर्वक विचार कर सकेंगे। जिन्हें दलित विमर्श से आपत्ति हो तो वे भी इन कविताओं में ताकतवर के खिलाफ कमजोर की आवाज को अनसुना नहीं किया जा सकता। अभाव की अभिव्यक्ति सर्वत्र है वह देश, धर्म और जाति सबसे परे और सबसे ऊपर सुनी जा सकती है।

भावेश में उठने वाले स्वर जब जातिगत भेदभाव के मूल में छिपे अन्याय जुल्म,दमन और षड्यंत्र की पीड़ा को धर्म पाखंड को राजनीतिक फलक पर उजागर करने का प्रयास करते हैं तो उनकी कविता सामाजिक यथार्थ के रूप में शक्ति और ऊंचाई पर पहुंचती प्रतीत होती है। इस अर्थ में बेचैन जी की कविता अभिजात संस्कृति और कुलीन काव्य संस्कारों वाली कविता के सामने एक अलग परंपरा की कविता मानी जा सकती है। इसी अर्थ में यह संस्कृत परंपरा में पढ़े लिखो की कविता नहीं है। यह कोरी किताबी कविता बिलकुल भी नहीं है। उस संदर्भ में 'भेद की फसल', 'चांद

लगा रोटी का टुकड़ा', 'किसवा लुट गई तेरी कमाई' जैसी कविताएं अधिक महत्वपूर्ण है।

<u>ग-):- आत्मकथा :</u>

1. मेरा बचपन मेरे कंधों पर (आत्मकथा भाग-1) - श्यौराज सिंह 'बेचैन', वाणी प्रकाशन, 2009.

2 My Childhood on My Shoulder (Autobiography English Translation), Oxford University Press.

मत पूछो उससे मौसम के बारे में, बारिश के बारे में, अपनी एकमात्र बेरंग घिसी हुई कमीज पहने, मत पूछो उससे एक सर्द एकालाप की तरह उसकी हड्डियों में दाखिल होती शिशिर की बेरहम बर्फीली ठंडक के बारे में। उससे यह भी मत पूछो कि वह बोलता है, गाता है, फ़ुस्फ़ुसता है। मैं अपना नाम खुद दोहराता हू, दुनिया की क्रूर मनुष्य निर्मित पाशविकता से बच कर किसी सर्दी, गर्मी, प्यार, करुणा या आश्रय की तलाश में है। आशा हताश और करतब भरी उनकी आत्मकथा। यही एक महा काव्यात्मक बचपन का एकालाप है जिसमें बहुतसंख्य आवाजे सनलिप्त हैं।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' यह सब भुगत चुके हैं। नियति का यह नन्हा सा शिशु सामंती भारत की क्रूर जाति व्यवस्था का यह दलित बच्चा बेचैन मौला जिसने नियति को चुनौती दी। अपना मौलिक मानचित्र तैयार किया है। मानवीय दास्तां के खिलाफ एक जंग है। हाथ की लकीरों में जो उसकी नियति को गति क्योंकि वह अपनी दुनिया की तामीर भी कर रहा है। एक नितांत विषम फ़ूहड़ अमानवीय और विवेक हीन समाज में बचपन से, व्यस्कता तक बच्चे से पुरुष बनने तक, यह एक दुर्लभ महाकाव्यात्मक साहित्य है क्योंकि गरिमा और मुक्ति की तरह इसका हर शब्द एक सपना है हर शब्द अनमोल है, मुक्ति भूख से, मुक्ति छुआछूत से, मुक्ति वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज के उत्पीड़न और अनैतिकता भरे भयावह कर्मकांड से। जहाँ तक मेरी स्मृतियों का प्रश्न है तो मुझे याद है दिसंबर 2009में जब मेरा दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद के लिए साक्षात्कार हुआ था, तब तत्कालीन कुलपति प्रोफेसर दीपक पेंटल ने मेरी आत्मकथात्मक पुस्तक को अपने हाथों से उलटते - पलटते हुए मुझसे यही प्रश्न किया था कि"डॉक्टर साहब आपने यह सब याद कैसे -

रखा?" इस पर मेरा जवाब था कि "सर -मैंने सायस कुछ भी याद नहीं रखा है जो मुझसे भुला नहीं गया, मैंने वही लिखा है।" सच में ये स्मृतियां इतनी दु:खद थी कि जब - जब मैं इस पुस्तक का 'प्रूफ' पढ़ता था। तब- तब मैं बीमार पड़ जाता था।"[19]

कामता प्रसाद मौर्य को साक्षात्कार देते समय श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने कहा था --अभी और आवश्यकता बढ़ गई है कि दलित साहित्य पर ज्यादा से ज्यादा शोधकार्य होंगे। अनेक कवि, कथाकार, आलोचकों के योगदानों का मूल्यांकन हो रहा है और कुछ होना बाकी है, लेकिन दलित स्त्री पक्ष अभी भी नगण्य है।"[20]

यदि आप इस देश में दलितों का प्रामाणिक आईना देखना चाहते हैं तो किताबों से आपको गुजर ना ही होगा। सवर्ण मानसिकता को बेचैन जी ने शिद्दत से महसूस किया है उनकी आत्मकथा में उस मानसिकता के कई मर्मस्पर्शी स्थान हैं। एक तरह से यह दु:ख दर्द की करुणा भरी दास्तान है। बेचैन जी कठिन संघर्ष कर पढ़ाई पूरी की। वे अपनी सीढ़ी खुद बने और उस पर चढ़े एम.ए. के बाद पीएचडी और डि-लिट् तक किया। वह बचपन में अंधविश्वासी, किशोरावस्था में आर्य समाजी और युवावस्था में वामपंथी बने और प्रौढ़ावस्था में बाबा साहेब आंबेडकर की राह के पथिक हैं।

"रजनी तिलक ने सम्यक भारत के साक्षात्कार में कहा था कि- डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' सहज है, स्पष्टवादी हैं और उनकी आत्मकथा की लेखन शैली असरदार है। उनकी कलम का जादू पाठक को बांधता है, दुश्मन को दोस्त बनाता है। उनके देखन को पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि जैसे कि मैं दलित साहित्य के साथ-साथ 'ब्लैक साहित्य' भी पढ़ रही हूँ।"[21]

'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' संस्मरण लिखती हुई रीमा शुक्ला लिखती है -- "आत्मकथा ने मुझे सोचने और लिखने के लिए विवश कर दिया। सोचती हूँ कि मेरे दस शिक्षक भी मुझे मेरे समाज का सच नहीं दिखा सके, जो अकेली आत्मकथा दिखा रही है।" [22]

"जब मैं हार के सारे काम समाप्त करने के बाद रात में आपकी किताब खोलती हूं तो मेरे हसबैंड कहते हैं कि अब रोना शुरू और सच में ऐसा ही होता है। मैं सोचती हूं अगर गरीबी के कारण आप अपने बच्चों को अलग करें

तो कैसा महसूस होता होगा। मैं यह सोच कर सिहर जाती हूँ कि अगर मेरी बेटी को मुझसे अलग होना पड़े बस यह सोच कर दुनिया की कोई भी माँ रो पड़ेगी।"[23]

शोधार्थी ने जब-जब आत्मकथा को पढ़ा वह कई रातों को चैन से सो नहीं पाया। कारण यह कि कोई लड़का पढ़ाई के लिए इतनी कुर्बानी कैसे दे सकता है? उसके साथ ही समाज की भूमिका सदैव नकारात्मक ही रही है इतने पर भी हौसला लगातार बढ़ रहा था।

रीमा शुक्ला लिखती है कि--"मैं आपकी आत्मकथा पढ़ रही थी और रो रही थी।" अब आगे क्या लिखूं समझ नहीं आ रहा? आपकी भाषा आदि की प्रशंसा करना तो एक छोटी बात है। मैं इतनी विद्वान भी नहीं बस इतना जरूर कहूँगी कि सार्थक लेखकीय कला वही है जो रोने, गाने, हँसने पर मजबूर कर दे। अब मुझे ऐसा लगता है मानो मेरे अंदर से कोई ऐसी नेगेटिव थिंकिंग खत्म हो गई, जो व्यक्तिगत संस्कारों के कारण मेरे चेतन में न सही अवचेतन में सक्रिय थी।"[24]

मेरे साक्षात्कार के दौरान श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने बताया था कि "मैं जिस कॉलोनी में रहता था एक बुजुर्ग एक दिन मेरे पास आए और मुझसे बताया कि मैं आपकी आत्मकथा की आठ - दस प्रति खरीद रखा हूँ और जब कोई बच्चा यह कहता है कि मैं अब पढ़ नहीं सकता हूं तो मैं आपकी आत्मकथा दे देता हूँ और बाद में वही बच्चा पुस्तक पढ़ने के बाद पुनः पढ़ाई शुरू कर देता है। शोधार्थी को लगा यही सच्चे साहित्य की उपयोगिता है उपयोगिता के आधार पर ही सर्वत्र उसकी चर्चा हो रही है। "देश में ही नहीं परदेस में भी उनकी कविताएं प्रसिद्ध हुई है। अमेरिका, कनाडा और जर्मनी में उन पर शोध कार्य हुए हैं। ऑक्सफोर्ड से उनकी एक किताब का अंग्रेजी अनुवाद हुआ है और पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है।"[25]

साक्षात्कार के दौरान बेचैन जी ने बताया था कि -- "एक विदेशी शोधार्थी मेरी आत्मकथा को पढ़कर शोध कर रहा था और उसकी सत्यता को पता करने के लिए वह मेरे घर, ससुराल एवं बहन के घर भी गया था और लोगों से साक्षात्कार किया था।

"दलित संगठन अंबेडकर जयंतीयों पर कई- कई ग्रुप में बट जाते थे परंतु बेचैन जी की मांग सभी में रहती थी। इसलिए कि उनकी वाक् कला में जादू था। व्यवहार में आकर्षण था हालांकि वह कविता के जादू को छोड़ कथा - कहानियों की ओर ज्यादा उन्मुख होते गए। वे दलित साहित्य के समीक्षक भी बने।"[26]

"श्यौराज सिंह बेचैन ने संभवत: १९८२ में एस. एम. कॉलेज, चंदौसी में बी. ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया था और १९८७ में यहीं से एम. ए. हिंदी किया था। उनसे पूर्व कुंवर बेचैन इसी कॉलेज के विद्यार्थी रहे हैं। बेचैन में शुरू से ही एक कवि मन था, जो उसके अभावों की काल्पनिक पूर्ति का माध्यम था। कॉलेज में छात्र कवि के रूप में उसकी शुरुआत हुई थी। कहीं शायद कुंवर बेचैन बनने की चाहत में ही उसने अपना उपनाम 'बेचैन' रखा था।" [27]

पुष्पा रानी जाटव ने अपने संस्मरण में लिखा है कि-- जब मेरी शादी हुई थी तब श्यौराज सिंह अपने नाम के साथ 'शास्त्री' लिखते थे। श्यौराज के नाम के साथ सरनेम लिखने की कहानी भी काफी रोचक है। ये महीने में दो- तीन बार अपना सरनेम बदल लिया करते थे। कभी 'शास्त्री' कभी 'बेचैन' तो कभी 'बदायूंनी' तो कभी 'नदरोलवी', चंदौसवी इत्यादि। इस पर श्यौराज सिंह बोले- -मैं चाहता हूँ कोई अच्छा सा सरनेम फाइनली तय कर लूँ। लेकिन अंतिम रूप से तय नहीं कर पा रहा हूँ। आप ही कोई अच्छा सा सरनेम लिखने की सलाह दीजिए।" [28]

यह पुस्तक छपने के पहले ही इस आत्मकथा के कई अंश कई भाषाओं के पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके थे। जैसे-- 'तहलका' (अंग्रेजी) में दो दर्जन से अधिक अंश प्रकाशित हुए हंस (हिंदी) पत्रिका में चार अंश, कादंबिनी में 2 अंश दैनिक अमर उजाला में तीन अंश, दैनिक हिंदुस्तान और दैनिक भास्कर अखबार में एक-एक, वाक् पत्रिका में एक, मराठी आम्ही मैतरणी में एक, एक लोकसत्ता में पंजाबी भाषा में 'प्रतिलड़ी' और उर्दू पत्रिका 'शेरे हिम्मत' आदि में छप चुके हैं।" [29]

श्यौराज सिंह 'बेचैन' की आत्मकथा की विशेषताएँ यह है कि यह भारत की असली तस्वीर पेश करती है इसमें गरीबी और छुआछूत दो विषय लिए गए हैं इन दो विषयों पर इससे पहले इतनी अच्छी किताब मैंने नहीं पड़ी यह विश्व स्तर की किताब बन कर आई है अच्छा है कि यह एक दलित की तरफ से ही आई है।

श्यौराज सिंह 'बेचैन' लिखते हैं समाज में लोग साधन संपन्न है। उनको आगे बढ़ने को मैं महत्त्व नहीं देता हूँ किन्तु सामाजिक, आर्थिक कष्टों अपमानों को भोगते हुए जो अपनी उन्नति का मार्ग बनाते हैं वे धन्य है। वास्तव में वे ही प्रसंशा के पात्र हैं। ऐसे लोग ही दलित समाज के पथ-प्रदर्शक होते हैं। ऐसे संघर्षशीलों में आप प्रशंसनीय हैं। पूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक ओर मध्यम वर्ग के प्रेरक बने हुए हैं। दूसरी ओर अश्वेतों के प्रेरक अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा बने तो ऐसे में कम से कम 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर ' दलित आदिवासी भारत के बच्चों के लिए तो प्रेरणा का पावर हाउस है। अनाथ होकर अश्पृश्यता और गरीबी के अभिशाप को ढोना कितना भारी होता है उसकी वास्तविक अनुभूति 'बेचैन' जी ने की। हम तो उसकी फोटोकॉपी ही कर सकते हैं।

यह डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' ने अच्छा ही किया कि अपनी आत्मकथा लिख दी है। उन्होंने यह और भी अच्छा किया कि अपने बचपन को कितनी गहराई और विस्तार से हमारे सामने रख दिया। यह भारतीय बच्चों पर उनका उपहार है। "इस पुस्तक के वजह से लोगों को इस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। यह व्यक्ति पढ़े-लिखों के लिए देवता है। जब यह पुस्तक आई थी, मैंने लेखक से कहा था कि लेखक को यह पता नहीं है कि उन्होंने यह कितनी अच्छी पुस्तक लिखी दी और प्रकाशक को धन्यवाद देते हुए प्रकाशक से यह कहा था कि प्रकाशक को यह पता नहीं है कि हिंदी में उन्होंने यह विश्व स्तर की पुस्तक छाप दी है।" [30]

वास्तव में किसी देश की पहचान वहाँ के श्रम-शील, कर्म प्रधान और प्रतिभा सम्पन्न मानवीय संसाधन से होती है जबकि हमारे समाज में शामिल सवर्ण मानसिकता भाग्य प्रधान है। जो बैठकर बिना किसी श्रम के केवल अपनी कुटिल बुद्धि के व्यापार से खाते हैं। उसने सदैव मेहनती व्यवसाय कर्मों और उससे जुड़ी जातियों को हेय दृष्टि से देखा है। हिंदुओं का उदारवाद

हिंदुओं में किसी परिवर्तन को स्वीकार नहीं है। यह बदलाव की हवा को रोकता है। यह हिंदुओं का सुरक्षा कवच है। निश्चित तौर पर यह उदारवादी हिंदुओं के लिए सेफ्टी बल्ब का कार्य करता है जो दबाव बना रहे प्रेशर को समय-समय पर निकालकर व्यवस्था के विस्फोटित होने का बचाव करता है।

दलित साहित्य की यह महत्वपूर्ण विशेषता है कि उसने सवर्ण साहित्य द्वारा निर्मित गाँव की 'सत्यम शिवम सुंदरम' की काल्पनिक छवि को तोड़कर सत्य का कड़वा यथार्थ प्रस्तुत किया है। इसे प्रस्तुत करने में यह आत्मकथा भी पूरी तरह सफल सिद्ध हुई है जो यथार्थ की तरल सच्चाईयों के साथ पेश हुई है।

डॉ धर्मवीर ने लिखा बालक श्यौराज की पढ़ाई के प्रति ललक की प्रशंसा करते हुए वे उस व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाते हैं जो ऐसे लाखों श्यौराजो के सपनों को आग लगा रही है "यह बच्चा अपनी परीक्षा में पाँच सौ गुना सफल हुआ हैं पर क्या व्यवस्था सौ प्रतिशत फेल नहीं हुई है? बच्चों के कुटुंब की क्या गलती है? एक भी गलती कैसे मानी जाए जब उसका हर विकलांग व्यक्ति तक काम कर रहा है? तब यही कहा जाए कि उन्हें मजदूरी ठीक नहीं मिल रही है। इसका जवाब है कि शोषण कायम है जो आर्थिक विषमता का मूल कारण है।"[31]

दलित साहित्य मनोरंजन और उपदेश का साहित्य नहीं है बल्कि परिवर्तन का अग्रदूत है जो मौसम चांद, प्रकृति और उजाले एहसास सवर्ण साहित्य के लिए खुशनुमा है। वह दलितों के लिए दग्ध अनुभवों का तीक्ष्ण एहसास है। डॉ धर्मवीर लिखते हैं- "साहित्यनामा होता है। साहित्य में मनुष्य और समाज का कुछ साधता भी है कि नहीं? यह मनोरंजन हो सकता है पर किसका? यदि समाज वर्णों, जातियों, छूतो,अछूतों और वर्गों में विभक्त है तो उन सभी लोगों के मनोरंजन एक से नहीं हो सकते एक मनोरंजन दूसरे का रोना हो सकता है। एक आदमी छत्तीस प्रकार के भोजन कर रहा है और दूसरा आदमी भूखे मर रहा है। दोनों का भोजन के बारे में अभिव्यक्ति एक सी नहीं हो सकती यह स्थिति साहित्य के बारे में भी है।" [32]

बालकवि बैरागी ने कहा- "मेरा बस चले तो मैं सरकार से यह किताब प्राइमरी से लेकर यूनिवर्सिटी तक के छात्रों को पढ़ना अनिवार्य करा दूँ।"[33]

अरुण कुमार त्रिपाठी लिखते हैं- "यह एक समाजशास्त्रीय दस्तावेज है, जिसके हर सफे पर बहस और कार्यवाही होनी चाहिए। श्यौराज नाहक ओबामा से तुलना में फंसे हैं, मुझे तो उनकी आत्मकथा ओबामा से कहीं ज्यादा बांधती है।"[34]

[घ]:-- प्रकाशनाधीन:

श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी का लेखन केंद्र बिंदु दलित और नारी ही मुख्य केंद्र है जो किसी के मन मस्तिष्क को झकझोर कर रख देता है। उनके साहित्य की खूबी यह है कि जीवन की सामान्य सी घटना या प्रसंग का इस प्रकार वर्णन करते हैं कि एक अनछुई स्थिति को सम्वेदनात्मक स्तर पर महसूस करते हैं। उनके साहित्य का कोई भी पात्र कठपुतली जैसा नहीं लगता और इनके उपन्यास में पात्रों की संख्या सीमित है। हर पात्र सजीवता के साथ समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज करता है तथा अव्यवस्थाओं के खिलाफ अपनी आवाज को बुलंद करता है जो परिस्थिति एवं घटना के साथ यथोचित व्यवहार करता है।

[ङ] :- यात्रा साहित्य:-

भारतीय साहित्य में हम सभी जाति भेद और रंगभेद की हकीकत को देखते पढ़ते और सुनते आए हैं। अश्वेतो, छूत- अछूतों की दुनिया में रहते जीते हम सुनी हुई और देखी हुई में अपना तालमेल बिठाते रहते हैं। श्वेत और अछूत जिस तरह अपने साहित्य और समाचारों के माध्यम से हमारी छवियों में आते हैं। वह आंखों देखी तस्वीर से बिल्कुल अलग है। इस बार २२-२४ सितंबर २०१२ को 9वा विश्व हिंदी सम्मेलन दक्षिण अफ्रीका की राजधानी जोहासबर्ग में संपन्न हुआ। हिंदुस्तान में जो सवर्ण हिंदू लेखक दलित नायकों की प्रतिमाओं का विरोध करते हैं। वे जोहासबर्ग में खड़ी नेल्सन मंडेला की प्रतिमा के चरणों में बैठकर तस्वीर खिंचवा रहे थे। उन्होंने रंग व नस्लभेद के खिलाफ जो जंग दक्षिण अफ्रीका में लड़ी। जाति भेद और बहिष्कार के खिलाफ वही जंग भारत में अम्बेडकर ज्योतिबा फूले, अछूतानन्द, काशीराम ने लड़ी। मायावती आज भी लड़ रही है। सवर्ण यहाँ मानवता, समानता, बंधुत्व और डेमोक्रेसी की बात करते हैं और देश में जाकर मीडिया, कला, साहित्य और संस्कृति के हर क्षेत्र में दलितों को बाहर रखते हैं।

जोहांसवर्ग एयरपोर्ट पर अधिकारियों में अधिकांश अश्वेत महिलाएं थी। भारत में दलित महिलाएं आज भी गैर दलितों के अत्याचारों के लिए ही अखबारों में या चर्चा में दिखती है। पत्रकारों में, जजों में, कुलपतियों में, राज्यपालों में पायलटों में और संपादकों आदि में भारत की दलित महिलाएं है ही नहीं। उसी समय भारत का एनडीटीवी बता रहा था कि भारत के हरियाणा में दलित बालिका के साथ सवर्ण हिंदू सामूहिक बलात्कार कर चुके हैं। मैं पूछ रहा था कि गांधीजी अफ्रीका में अश्वेत की आजादी की प्रेरणा बने तो अपने देश में दलितों को कितनी आजादी दिला कर गए? यह बात हम सभी दलित समुदायों को सोचनी चाहिए कि हमारा हक, अधिकार गांधी ने दिया या फिर अंबेडकर के प्रयास से मिला।

हिंदी सम्मेलनों को सवर्ण हिंदू सम्मेलन बनाने को आतुर रहते हैं। दक्षिण अफ्रीका जहाँ अश्वेतों के साथ रंग और नस्ल के आधार पर भेदभाव हुआ। वहाँ सब अश्वेत साहित्य में उभर कर आए हैं लेकिन भारत में जाति भेद के परिणाम स्वरूप भारतीय समाज और साहित्य की प्रगति में आये अवरोध को दलित साहित्य ने बखूबी तोड़ा है नेल्सन मंडेला के नेतृत्व में अश्वेतों के संघर्ष ने उन्हें इतना तो आजाद कर दिया है कि कोई श्वेत या कोई अन्य नस्ल अब उन्हें गुलाम नहीं बना सकता। आजादी ने उनका बौद्धिक सशक्तिकरण किया है उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाया है जबकि उसकी तुलना में भारत के अछूतों को कुछ भी नहीं मिला है।

दक्षिण अफ्रीका में अश्वेतों को 'कंपलसरी फ्री इक्वल एंड क्वालिटी एजुकेशन' खासकर काली लड़कियों को प्रोफेशनल जॉब ओरिएंटल एजुकेशन देने का आंदोलन चल रहा है। देश के सोशल डेवलपमेंट को लोग देखने आते हैं। जबकि यहाँ के दलित बालिकाओं के अभिभावक उन्हें स्कूल-कॉलेज न भेजने को मजबूरी भरा कदम उठा रहे हैं। अश्वेत शिक्षा का आंदोलन कहां ले गया अफ्रीका को? और कहां ले जा रहा है? हमारे देश को जहाँ सब पढ़े और सब बढ़े का अभियान सिर्फ नारे तक सीमित है। मैंने गोवेंडर से बताया कि गरीबों और दलितों के बच्चों को पढ़ाना मुश्किल हो गया है। समान शिक्षा नहीं है। गैर दलितों से भेदभाव बनाए रखने के लिए महंगे और अलग प्राइवेट स्कूल खोल लिए हैं। जिसमें अब शिक्षा ग्रहण करना ये संभव नहीं है। लोग दलितों और कमजोरों के लिए अंग्रेजो से भी ज्यादा बुरा देश बना रहे हैं। उन्होंने आजादी धनी और सवर्ण तक सीमित कर दी है।

सम्मेलन के आखिरी दिन सवर्ण हिंदुओं ने एक कवि सम्मेलन आयोजित किया। मंच पर एक भी दलित कवि आमंत्रित नहीं था जबकि कवि, प्रोफेसर कालीचरण 'स्नेही' और मैं स्वयं मौजूद था। देश में जिस तरह ये लोग हर कवि सम्मेलन को सवर्ण जाति वादी कवि सम्मेलन बना लेते हैं उसको वैविध्यपूर्ण राष्ट्रीय स्वरूप बनने नहीं देते। उसी तरह से ये अपना संकीर्ण चरित्र विदेशों में भी बनाए रखते हैं। हमारे देश में दलित साहित्य भारत की एक सामाजिक सच को बखूबी कह रही है।

अश्वेतों के नेतृत्व में अफ्रीका फल-फूल रहा है और भारत में रामराज्य दलितों पर अमानवीय जुल्म ढा रहा है। क्या अंग्रेज दलितों को जाति के आधार पर पढने बढ़ने से रोकते थे? क्या वे दलित बच्चियों के साथ बलात्कार किया करते थे? सवर्ण हिंदुओं के राज में क्या हो रहा है? देश में दलित साहित्य की धूम है लेकिन सम्मेंलन में एक भी सत्र दलित साहित्य पर नहीं था। अगर यह सब नहीं था तो सवर्णों द्वारा महात्मा गांधी और नेल्सन मंडेला के गुण किस मुंह से गाए जा रहे थे? यह सब सोचने की बात है। हम अंग्रेजों से 70 साल बाद हर्जाना मांग सकते हैं लेकिन हमने जिसे गुलाम बना रखा उसे हर्जाना नहीं चाहिए। विश्व हिंदी सम्मेलन सूरीनाम बैकुवर (कनाडा), हालैण्ड और ग्रेट ब्रिटेन आदि देशों में ऐसा आचरण नहीं है बल्कि हमारे साहित्य में ही नहीं धर्म ग्रंथों एवं आर्थिक सामाजिक हर स्तर पर यही दोहरा आचरण दिखाई देता है जो सच को आवृत करता है।

लेखक की सबसे बड़ी ताकत यही है कि दुनिया में बड़ी-बड़ी प्रतिभाएं स्कूलों के बाहर से ही आती है। कवि के आदर्श डॉ. भीमराव अम्बेडकर, नेल्सन मंडेला, भगत सिंह और वर्तमान - निवर्तमान के समाज सेवक हैं। जिन्होंने समाज में क्रांति का बिगुल बजाकर उसे एक नई दिशा दी।

<u>साहित्यिक प्रेरणा-:</u>

श्यौराज सिंह बेचैन जी दलित साहित्य के चर्चित नारी लेखक, कवि, प्रसिद्ध अंबेडकरवादी विचारक, साहित्य साधक हैं। उनकी आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' ने प्रकाशन से पूर्व ही साहित्य की दुनिया में अच्छी खासी

हलचल पैदा कर दी भी। मराठी में रेखा देशपांडे ने, पंजाबी में बलवीर माधोपुरी ने इनका अनुवाद किया है। फ्रेंच में अन्ना और अंग्रेजी में डॉक्टर तपन घोष कर रहे हैं। जर्मन अनुवाद नेपाल के रिसर्च स्कॉलर अल्का खलील ने जर्मन में रहकर इनकी आत्मकथा का अनुवाद किया। अभी भी उर्दू, मलयालम, कन्नड़, तेलुगु और गुजराती में इनकी रचना पर काम शुरू हुआ है जो शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

प्रो. कालीचरण 'स्नेही' इन्हें प्रेरणा का पावर हाउस ऐसे ही नहीं कहते हैं। यह आत्मकथा भारतीय दलित परिवारों में पल बढ़ रहे, तमाम अभावग्रस्त बच्चों की प्रतिनिधि आत्मकथा कही जा सकती है। जब उनके पिता का देहांत होता है तो उस समय बालक श्यौराज की उम्र मात्र चार वर्ष की थी। तब से १०वीं पास कर लेने तक का सफर उनके त्याग,बलिदान,संघर्ष एवं साहस तथा जिजीविषा के प्रति एक ऐसी भावना को जागृत करती है कि भारतीय दलित परिवारों का यथार्थ खुद साकार हो उठता है।

वे कबीर की भांति घुमक्कड़ एवं फक्कड़ व्यक्तित्व की डिमांड करती है। कवि अल्पायु में ही तमाम अच्छाइयों-बुराइयों से अवगत हो चुका है। समाज की असलियत अगर कोई देखे तो कवि,लेखक, विचारक बेचैन जी उनके जीते-जागते साक्षात् उदाहरण हैं।

श्यौराज सिंह बेचैन जी का सफ़ल पारिवारिक जीवन सदैव साहित्य सेवा में पतिपत्नी सक्रिय रहते हैं। समाज की आवाज को तत्परता से रखते हैं।आज - इस दम्पति की चर्चा दलित साहित्य एवं समाज में अग्रणीय है। समाज में डा. अम्बेड़कर के राम राज्य की कल्पना को चरितार्थ करने के लिए दिल दिमाग से चिन्तन में ही व्यतीत होता है। क्योंकि वे अपनी चेतना के निर्माण में अम्बेड़कर जी के प्रभाव को महत्वपूर्ण मानते है। युगीन यथार्थ को भोगने के बाद दलितो के प्रति चेतना भी भरने के लिए बेचैन जी लिखने के लिए प्रेरित किया। कबीर, रैदास,अम्बेड़कर, ज्योतिबा फ़ूले, सन्त गाड़से, नारायण गुरू, ओमप्रकाश वाल्मीकि, सूरज पाल चौहान, मोहनदास नैमिशराय, दया पवार आदि अनेक लेखक प्रेरणा के श्रोत रहे है। उनमें अछूतानन्द और डा. धर्मवीर के चिन्तन के प्रति श्यौराज सिंह बेचैन का विशेष लगाव रहा है।

[स]-: <u>सम्पादन कार्य-:</u>

प्रो० श्यौराज सिंह 'बेचैन' कवि हृदय से समाज सेवी कथाकार होने के साथ-साथ एक बड़े पत्रकार भी है। पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने अनेक सराहनीय कार्य किया है। श्यौराज सिंह बेचैन ने हिन्दी दलित साहित्य की विचारधाराओं को और सुदृढ़ करने के लिए समय-समय पर अनेकों पत्र- पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। जिसको निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है।

[क]:- <u>प्रधान सम्पादन:-</u>

श्यौराज सिंह बेचैन जी ने प्रधान सम्पादक के रूप में त्रैमासिक पत्रिका बहुरि नहि आवना का सम्पादन किया। इसके माध्यम से उन्होंने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की एवं दलित चिन्तन का प्रमुख स्वरूप और हिन्दी दलित साहित्य विविध आयामों का सम्यक प्रस्तुतिकरण किया। जिसके द्वारा हिन्दी दलित साहित्य को एक सुदृढ आधार प्राप्त हुआ।

[ख]:- <u>अतिथि संपादन:-</u>

प्रो० श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी ने अतिथि सम्पादक के रूप में भी कार्य किया है 'हंस' पत्रिका में अगस्त २००४ को सत्ता विमर्श और दलित' शीर्षक लिखे हुए अपने अतिथि सम्पादकीय में बेचैन जी ने साहित्य समाज केन्द्रित मूलभूत मुद्दों को उन्होंने रेखांकित किया था। दलितों के प्रति हुई राजनैतिक उपेक्षा की ओर भी उन्होंने ध्यान खीचा था। जिससे प्रभावित होकर इस सम्पादन में राजेन्द्र यादव ने कहा- "डा० श्यौराज सिंह बेचैन ने जिस गहरे सरोकार, परिश्रम और प्रतिबद्धता के साथ निभाया है, उसके लिए इसके पाठकों की ओर से मैं उनका कृतज्ञ ही हो सकता हूँ।"[35]

[ग]:- <u>कार्यकारी सम्पादन:-</u>

प्रो० श्यौराज सिंह बेचैन जी सन १९९५ से सन १९९८ तक दलित मासिक पत्रिका का कार्यकारी सम्पादक के रूप में उन्होंने सम्पादन कार्य किया जिसमें दलित चिन्तन प्रमुख प्रक्रिया थी।

[घ]:- <u>अन्य सम्पादन:-</u>

प्रो० श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी हिन्दी, मासिक, समय सरोकार में दो विशेषांक-जनवरी और फरवरी १९९८ तथा बॉयस आफ द वीक (सा० हिन्दी संस्करण) अक्टूबर १९९० से अप्रैल १९९५ तक उन्होंने सम्पादन कार्य किया।

उसके साथ ही अनेक साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रतिनिधि मण्डल, संरक्षक मण्डली में सहभागिता प्रदान की। दलित साहित्य पत्रिका सम्यक भारत में संरक्षक मण्डली में श्यौराज सिंह बेचैन जी ने अपना बहुमूल्य समय दिया है।

[द]:- <u>शोधकार्य-:</u>

प्रो० श्यौराज सिंह बेचैन जी के शोध कार्यों को निम्नलिखित प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है:-

[क]:- <u>पी० एच० डी० हेतु शोधकार्य:-</u> प्रो० श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी ने अपने पी० एच० डी० उपाधि हेतु "हिन्दी दलित पत्रकारिता पर पत्रकार अम्बेडकर का प्रभाव" शीर्षक पर डा० वीरेन डंगवाल के निर्देशन में शोध कार्य पूरा किया। यह शोध ग्रन्थ देश का प्रथम दलित पत्रकारिता का शोध ग्रन्थ माना गया तथा इसे १९९९ ई० में लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में स्थान भी प्राप्त हुआ है।

यह शोध पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान दिल्ली के पी-एचडी स्तर के पाठक्रम में कई वर्षों से सहयोगी ग्रन्थ रहा है। इस ग्रन्थ के महत्व को दृष्टि में रखते हुए महू संस्थान के माध्यम से उनको एक लाख का अम्बेडकर सम्मान प्रदान किया जा चुका है।

[ख]:- <u>डी० लिट्० हेतु शोधकार्य :-</u> प्रो० श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी ने अपने डी० लिट्० उपाधि हेतु हिन्दी के दलितेतर - वर्ग के स्वतंत्रता पूर्व रचित उपन्यास साहित्य में प्रस्तुत दलित समस्या और समाधान शीर्षक पर शोध भी पूर्ण किया है।

अध्येत्तावृत्ति:- प्रो० श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी के द्वारा भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, राष्ट्रपति निवास शिमला शोध परियोजना से "हिन्दी दलित साहित्य

का इतिहास, शोध एवं सृजन" विषय पर एक लम्बा शोध कार्य किया जा चुका है जो खुद में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है।

<u>प्राप्त पुरस्कार/ सम्मान :–</u>

1. राष्ट्रीय सुब्रह्मण्यम् भारती सम्मान, महा.म. राष्ट्रपति जी के कर कमलों द्वारा, 24/09/2016

2.अंबेडकर नेशनल अवॉर्ड- 2014, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली

3. राष्ट्रीय हिन्दी गौरव सम्मान, द्वारा हिंदी संसदीय समिति और साहित्य परिचय परिषद-2015

4. साहित्य भूषण राष्ट्रीय सम्मान, हिंदी साहित्य संस्थान; उ. प्र.

5. बाबा साहब डॉ. बी. आर. अम्बेडकर राष्ट्रीय सम्मान 2002 'महू अम्बेडकर-नेशनल शोध संस्थान' म.प्र.

6. नई धारा-रचना सम्मान (नेशनल लेवल)

7. गद्य विद्या सम्मान (नेशनल लेवल), हिन्दी अकादमी दिल्ली, 30 सितम्बर, 2019

8. संतराम बी.ए. स्मृति सम्मान (नेशनल लेवल), संतराम बी.ए. फाउंडेशन, 2019 9. श्री राकेश सोनी मेमोरियल गुरु घासी दास राष्ट्रीय पुरस्कार, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, 2014

10. नेशनल भीम रत्न सम्मान, 14 अप्रैल, 2008, डॉ. अम्बेडकर मेमोरियल समिति, सराय काजी मुरादाबाद, उ.प्र.

11.Award of Appriciation by Govt of NCT of Delhi-Costitution Day Celebration-26 November 2015, State level award

12. कबीर सेवा सम्मान, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उज्जैन, म.प्र.

13. राजेन्द्र प्रसाद अवॉर्ड द्वारा इण्टर नेशनल इमीनेंट एजुकेशन फोरम ऑफ इण्डिया, 2004-2005

14. स्वामी अछूतानंद अति विशिष्ट सम्मान, 1996, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उ.प्र.

15. भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास शिमला की ओर से हिन्दी दलित साहित्य का इतिहास लिखने के लिए फैलोशिप अवॉर्ड

16. अम्बेडकर नेशनल विशेष सम्मान- 1997 भारतीय दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली।

17. डॉ. बी. आर अम्बेडेकर रत्न सम्मान 1997 भारतीय दलित विकास संस्थान मेरठ, उ.प्र.

18. प्रथम पुरस्कार कृति आधारित सम्मान, दलित साहित्य अकादमी 20.8.2000 उज्जैन।

19. प्रथम पुरस्कार- कविता प्रतियोगिता, रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय स्तरीय, 1987

20. तृतीय पुरस्कार वाद-विवाद (छात्र) प्रतियोगिता, रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय-स्तरीय, 1986

अनेक प्रथम / Many first-:

1. पहला-दलित अध्यक्ष-हिन्दी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-07

2. पहला-दलित एवं सीनियर प्रोफेसर - हिन्दी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-07

3. पहला-शोधकर्ता- हिन्दी दलित पत्रकारिता पर पत्रकार अम्बेडकर का प्रभाव (लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में दर्ज)

4. हिन्दी का पहला दलित आत्मकथाकार जिसकी आत्मकथा का अंग्रेजी अनुवाद (My Childhood On My Shoulders) OXFORD UNIVERSITY PRESS ने प्रकाशित किया 2018

5. पहला दलित स्तंभकार जिसने 'राष्ट्रीय सहारा' हिन्दी दैनिक में तीन साल नियमित स्तंभ (दलित उवाच) तथा अमर उजाला व हिन्दुस्तान में लेख लिखे।

6. पहला दलित अतिथि संपादक-कथा मासिक 'हंस' पत्रिका अगस्त 2004

7. पहला दलित अध्येयता एडवांस्ड स्टडीज राष्ट्रपति निवास शिमला।

8. पहला दलित प्रस्तोता (एंकर) जैन.टी.वी. कमलेश्वर के साथ, 2002-3

9. अध्यक्षता (दलित लेखक संघ स्थापना सभा 15 अगस्त 1997) की समाचार - दैनिक राष्ट्रीय- 22 अगस्त 1997

<u>प्रकाशित ग्रंथ पुस्तकें:–</u>

<u>आत्मकथा:-</u>

1. मेरा बचपन मेरे कंधों पर (आत्मकथा भाग -1)- श्यौराज सिंह 'बेचैन' वाणी प्रकाशन, 2009

2. My Childhood on My Shoulder (Autobiography English Translation), Published From Oxford University Press

<u>कहानी संग्रह:-</u>

1. हाथ तो उग ही आते हैं, (कहानी संग्रह) वाणी प्रकाशन, 2020

2. मेरी प्रिय कहानियां- राजपाल एण्ड सन्स-1590, मदरसा रोड़ कश्मीरी गेट दिल्ली-6 संस्करण-2019

3. भरोसे की बहन (कहानी संग्रह)- श्यौराज सिंह 'बेचैन' वाणी प्रकाशन, 2012

<u>कविता संग्रह-:</u>

1. भोर के अंधेरे में (कविता संग्रह) श्यौराज सिंह 'बेचैन' वाणी प्रकाशन, 20018

2. चमार की चाय (कविता संग्रह)- श्यौराज सिंह 'बेचैन' वाणी प्रकाशन, 2017

3. 'क्रौंच हूँ मैं' (कविता संग्रह)- श्यौराज सिंह 'बेचैन' हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा चयनित पांडुलिपि पर सहयोग सौजन्य से प्रकाशित।

इस काव्य संग्रह पर शोध कार्य हो चुके हैं और पांच कविताएं- चेतना के स्वर नामक पुस्तक में संग्रहीत होकर गढ़वाल विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के काव्य में पढ़ाई जा रही है। (सहयोग प्रकाशन 41, सहयोग अपार्टमेंट्स मयूर विहार फेज 1 दिल्ली-90), 1995

4. नई फसल (कविता संग्रह) - श्यौराज सिंह 'बेचैन', यहां लेखक के किसानों दलितों के बीच लिखे गए सामाजिक गीतों और कविताओं का संग्रह है। यह संग्रह 1994-95 में जे. एन. यू. के हिन्दी लघु शोध प्रबंध में आधार ग्रंथों में भी विवेचित हुआ है। (वाणी प्रकाशन- 1988) पुस्तकें।

5. आशास्मृति कविता।

6. फूलन की बारहमासी कविता।

<u>दलित साहित्य से संबंधित आलोचनात्मक एवं सैद्धान्तिक–:</u>

1. दलित साहित्य और सामाजिक न्याय, आई.आई.ए.एस. शिमला, 2014

2. उत्तरसदी के कथा साहित्य में दलित विमर्श (आलोचना), अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2012

3. 'सामाजिक न्याय और दलित साहित्य' - सं. श्यौराज सिंह 'बेचैन' वाणी प्रकाशन दरियागंज दिल्ली-2

4. उपन्यास साहित्य में दलित समस्या एवं समाधान (आलोचना) श्यौराज सिंह 'बेचैन' अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2014

5. स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका (लेख संग्रह), साहित्य संस्थान, लोनी गाजियाबाद, 2009

6. फूलन की बारहमासी (लोक काव्य) प्रकाशित 1982 चन्दौसी मुरादाबाद-उ.प्र

7. समाज साहित्य के प्रश्न और दलित चेतना- श्यौराज सिंह 'बेचैन'- अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 4697/9, 21 ए अंसारी रोड, दरियागंज नई दिल्ली, 2019

8. 'दलित दखल'- (संपादक-श्यौराज सिंह 'बेचैन' रजत रानी मीनू) नामक ग्रन्थ, साहित्य में लोकतांत्रिक मूल्यों को लेकर विचारों को संकलित किया है इसमें कमलेश्वर, नामवर सिंह, राजेन्द्र यादव से लेकर दलित वर्ग के सभी प्रमुख लेखकों को संकलित किया है। (सहयोग प्रकाशन 41, सहयोग अपार्टमेंट्स मयूर विहार फेज 1 दिल्ली-90), 1995

<u>पत्रकारिता से संबंधित पुस्तकें-</u>:

1. मीडिया में सामाजिक लोकतंत्र, अनामिका प्रकाशन

2. मूकनायक के सौ साल और अस्मिता संघर्ष के सवाल, एकेडेमिक पब्लिकेशन दिल्ली, 2021 मो. 9811966175

3. समकालीन हिन्दी पत्रकारिता में दलित उवाच (निबंध)- श्यौराजसिंह 'बेचैन'- नामक ग्रन्थ में दैनिक राष्ट्रीय सहारा में प्रकाशित तीन साल के दलित उवाच स्तम्भ की सभी किश्तों का संकलन व लेखक के स्वयं का संपादन है। अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2007

4. 'गांधी-हरिजन, अम्बेडकर - जनता' - श्यौराजसिंह 'बेचैन' (समाचार पत्रों के संदर्भ दोनों पत्रों का अध्ययन है गांधी जी अंग्रेजी पत्र "हरिजन' के संपादक थे और अम्बेडकर मराठी जनता के इन पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय महापुरुषों के वैचारिक अवदान को समझने के लिए इस ग्रंथ का अध्ययन किया जाना समीचीन है। (सिद्धार्थ बुक्स, 1/4446, रामनगर एक्सटेंशन गली नं. 4 डॉ. अमबेडकर गेट, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032), 2019

5. मीडिया उत्तर-आधुनिक अस्पृश्यता के दौर में (निबंध संग्रह) - श्यौराज सिंह 'बेचैन', साहित्य संस्थान लोनी, 2010

6. हिन्दी की दलित पत्रकारिता पर पत्रकार अम्बेडकर का प्रभाव- श्यौराज

सिंह 'बेचैन' भारतीय जनसंचार संस्थान के स्नातकोत्तर स्तर के पत्रकारिता पाठ्यक्रम तृतीय प्रश्न पत्र में सम्मिलित है एवं लिम्का ऑफ बुक रिकार्ड 1999 में उल्लेखित । प्रकाशन, शाहदरा दिल्ली-32), 1997

7. अम्बेडकर गांधी और दलित पत्रकारिता (शोध) - श्यौराज सिंह 'बेचैन'

अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2010

8. 'मीडिया और दलित' (डॉ. भीमराव अम्बेडकर) - सं. श्यौराज सिंह 'बेचैन' गौतम बुक सेंटर, सी 263 ए, चन्दन सदन, गली-9 हरदेवपुरी, शाहदरा दिल्ली -110093 फोन 011-22810380, 09810173667

9. 'बहिष्कृत भारत' (डॉ. भीमराव अम्बेडकर) - सं. श्यौराज सिंह 'बेचैन' सह सं. रजतरानी मीनू- गौतम बुक सेंटर, सी 263 ए, चन्दन सदन, गली-9 हरदेवपुरी, शाहदरा दिल्ली-110093 फोन 011-22810380, 09810173667

10. 'मूकनायक' (डॉ. भीमराव अम्बेडकर) सं. श्यौराज सिंह 'बेचैन' सह सं. रजतरानी मीनू गौतम बुक सेंटर, सी 265 ए, चन्दन सदन, गती-9 हरदेवपुरी, शाहदरा दिल्ली-110093 फोन 011-22810380, 09810173667

<u>श्यौराज सिंह -'बचैन' द्वारा अनुदित संपादित ग्रंथ:</u>

1. 'दलित क्रांति का साहित्य' श्यौराज सिंह 'बेचैन'- मराठी का संकलन और उसका अनुवाद तथा संपादन कर पुस्तक रूप में समता से प्रकाशित इस में वैचारिक क्रान्ति के महत्व को डॉ. बी. आर अम्बेडकर के 1947 से पहली बार अनुदित किया है। (संगीता प्रकाशन, विश्वास नगर शाहदरा दिल्ली-32)

2. चिंतन की परंपरा और दलित साहित्य- श्यौराज सिंह 'बेचैन'-यह सम्पादित ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में देश के दलित गैर दलित सभी चोटी के लेखकों, बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों, समाज शास्त्रियों और पत्रकारों के विचारों को संकलित-संपादित किया है। इस में संकलन और संपादन में डॉ. देवेन्द्र चौबे साथ हैं। (नयलेखन प्रकाशन, मेन रोड हजारीबाग, बिहार), 1997

3. 'अन्याय कोई परम्परा नहीं' (डॉ. बी. आर. अम्बेडकर) (1998)- श्यौराज सिंह 'बेचैन शीर्षक ग्रन्थ में डा. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा संपादित 'बहिष्कृत

भारत के संपादकीयों को मराठी से हिन्दी में अनुवाद प्रकाशित (संगीता प्रकाशन, शाहदरा)

4. 'मूल खोजों विवाद मिटेगा' (1996)- श्यौराज सिंह 'बेचैन' ग्रन्थ में डा. भीमराव अम्बेडकर के समाचार पत्र "मूकनायक (मराठी) के समस्त संपादकीयों का हिन्दी में अनुवाद व संपादन करके प्रकाशित किया है।

5. स्वराज. हमारे ऊपर राज (डॉ. बी. आर. अम्बेडकर-श्यौराज सिंह बेचैन' अनुवाद मराठी से हिंदी, कंचन प्रकाशन, विश्वास नगर, शाहदरा दिल्ली-110032, 2002

<u>प्रो-. श्यौराज सिंह बेचैन की रचनाओं पर प्रकाशित आलोचनात्मक ग्रंथ:</u>

1. दलित प्रश्नः श्यौराज सिंह बेचैन का लेखन-कविता यादव मार्जिनलाइ

पब्लिकेशन इग्नू रोड़, दिल्ली-68 संस्करण-2019

2. 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर- आत्मकथा में अभिव्यक्त दलित जीवन' दशरथ-हर्षवर्धन पब्लिकेशन प्रा. लि. लिवागनेस, जिला वीड (महाराष्ट्र). 2019

3. बालक श्यौराज : महाशिलाखण्डों का संग्राम, डॉ. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण 2014

4. श्यौराज सिंह 'बेचैन' के काव्य में दलित चेतना-डॉ. गणेशदास सरोदए, लता साहित्य सदन, ई-10/666 उत्तरांचल कालोनी निकट संगम सिनेमा, लोनी, गाजियाबाद, संस्करण-2013

5. दलित वचपन: वेदना का विस्फोट ; श्यौराज सिंह 'बेचैन' की आत्मकथा 'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' का आलोचनात्मक अध्ययन, संपादक- डॉ. नितीन गायकवाड़, स्वराज प्रकाशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली- 02, संस्करण-2015

6. हिंदी की चर्चित दलित आत्मकथाएं, डॉ. ललिता कौशल, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद उ.प्र.।

7. हिंदी दलित आत्मकथाओं में बचपन : एक हिस्सा श्यौराज सिंह की आत्मकथा पर डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर, गौतम बुक सेंटर, चंदन सदन, सी-263, ए, गली नं 9, हरदेवपुरी, शाहादरा-93, संस्करण 2013

8. दलित साहित्य के सन्दर्भ में - श्यौराज सिंह 'बेचैन' की आत्मकथा-'मेरा बचपन मेरे कन्धों पर' डॉ. ओम प्रकाश द्विवेदी, सुनील कुमार सलैडा

9. भरोसे ची बहन (श्यौराज सिंह 'बेचैन')- अनु. डॉ. नितीन गायकवाड, प्रकाशन-निर्मिती संवाद, 873, क/ 2, सी वार्ड, सिद्धीश्री प्लाजा, राजाराम रोड कोल्हापुर-2016

<u>आत्मकथा- 'मेरा बचपन मेरे कधों पर' की समीक्षाएं-:</u>

1. 'योद्धा बने हर दलित, महाश्वेता देवी- दैनिक हिन्दुस्तान 6 दिसंबर 2009

2. 'वजूद की तलाश' जनसत्ता में उमाशंकर चौधरी -1 नवंबर 2009

3. 'विमर्श नहीं, दलित जीवन- कथा' कथादेश में बजरंग बिहारी तिवारी- दिसंबर 2009

4. हंस और 'सम्यक भारत' में विभांशु दिव्याल- फरवरी 2010

5. 'अपराधी कौन' जनसत्ता में डॉ. धर्मवीर द्वारा बजरंग बिहारी और उमाशंकर चौधरी को जवाब 17 जून, 2010

6. 'बेचैन करने वाले ब्योरे इंडिया टुडे में प्रियदर्शन की समीक्षा - 21 अप्रैल 2010

7. 'नई दुनिया में ओम भारतीय- 17-10-09

8. 'हम और श्यौराज सिंह बेचैन' अरुण त्रिपाठी द्वारा ब्लाग लेखन तथा युवा संवाद में अप्रैल 2010

9. 'बहुरि नहीं आवना' जन मार्च 2010 में डॉ. राजेन्द्र बड़गूजर

10. 'बयान' और 'नई धारा' दिस', कैलाश दहिया -जन, 2010 में

11. राष्ट्रीय सहारा 27 दिसंबर 2009 में दीपक राजा द्वारा तथा विभांशु

दिव्याल द्वारा 'देहात का दलित यथार्थ' शीर्षक स्तंभ रा. सहारा 16-8-2009

12. 'बालक श्यौराज : महा शिलाखण्डों का संग्राम'- डॉ. धर्मवीर द्वारा लिखित एक पुस्तक।

'हिन्दी दलित पत्रकारिता पर पत्रकार अम्बेडकर का प्रभाव' की समीक्षाएँ:-

1. अजित राय दलित पत्रकारिता पर पुस्तक-दैनिक हिन्दुस्तान, रविवारीय-3 मई 1998

2. चन्द्रभान प्रसाद - इंडिया टुडे-19 सितंबर 07

3. ओमप्रकाश वाल्मीकि- 8-8-99-अमर उजाला

4. ज्ञानेन्दु ज्ञान दलित - पत्रकारिता में लोकतान्त्रिक दखल' राष्ट्रीय सहारा 28 मार्च 1999 दैनिक।

5. शंभूनाथ शुक्ल - 'दलित पत्रकारिता के मायने' रविवारी जनसत्ता 11 अक्टूबर-1999

6. माता प्रसाद-(महा. म. राज्यपाल अरुणाचल प्रदेश) हिन्दी की दलित पत्रकारिता 'पूर्वदेवा' (त्रैमासिक शोध पत्रिका) अप्रैल जून 98

7. ओमप्रकाश वाल्मीकि-पत्रकारिता का विश्लेषण 'इण्डिया टूडे' मई 1998

8. बजरंग बिहारी तिवारी - जागरूक होने और करने की जरूरत 'हंस' फरवरी 1998

9. कंवल भारती-दलित लिबरेशन टुडे

10. देवेन्द्र चौबे- 'हिन्दी पत्रकारिता में दलित विमर्श और अम्बेडकर' पश्यंती जनवरी मार्च 1999

11. हीरालाल नागर-'हिन्दी की दलित पत्रकारिता और अंबेडकर' 'हंस' मार्च कथा मासिक 1998

12. डॉ. एन. सिंह- 'अनछुए पृष्ठों का शोध'- समय सरोकार, मार्च 1998

13. मोहनदास नैमिशराय -'अंधेरे में झांकने का प्रयास' समय सरोकार मार्च 1998

14. डॉ. धर्मवीर- 'लेखक के अम्बेडकर' कथा मासिक हंस अक्टूबर 1998

15. चन्द्रभान प्रसाद- 'हिन्दी दलित पत्रकारिता के निहितार्थ' हिन्दी त्रैमासिक संचेतना' सितम्बर दिसंबर 1998-

16. जवरीमल्ल पारख - दलित पत्रकार और अम्बेडकर का प्रभाव - 'वर्तमान साहित्य' (हिन्दी मासिक) अंक अगस्त 1999

17. डॉ. तेजसिंह - 'दलित पत्रकारिता के बुनियादी सरोकार'- आज का दलित साहित्य – 2001

संपादन-:

(ग) वॉयस ऑफ दी वीक (हिंदी संस्करण) में अक्टूबर 1990 अप्रैल से 1995 तक अंशकालिक अवैतनिक सह संपादन कार्य किया।

दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के कार्यक्रमों में भागीदारी

रेडियो और दूरदर्शन:--

(रेडियो रामपुर, दिल्ली, शिमला और चण्डीगढ़ आदि स्टेशनों से अनेक रचना पाठ साक्षात्कार और परिचर्या में भागीदारी)

1. वार्ताओं का अखिल भारतीय कार्यक्रम परिचर्चा 'सात स्वर : एक राग' ऑल इंडिया रेडियो दिल्ली, 22 अक्टूबर 2021

2. साहित्यिकी- परिचर्चा -'साहित्यिकी शिक्षा' ऑल इंडिया रेडियो दिल्ली, ३ सितंबर 2021

3. गुरु रैदास की वाणी- प्रधानमंत्री के मन की बात पर चर्चा, आकाशवाणी, दिल्ली रिकॉर्डिंग 10 मार्च, प्रसारण 14 मार्च, 2021

4. N. DT.V, 16.1.2005 हमलोग कार्यक्रम में अतिथि रूप में प्रतिभागी

5. साहित्यिक काव्यपाठ - 26 /9/02 (प्रसारण - रेडियो -दिल्ली)

6. साहित्यिक परिचर्चा विषय : 'दलित साहित्य में भागीदारी' दिनांक 18.9.2000, प्रसारण 25.9.2000 आकाशवाणी, नई दिल्ली।

7. Subject To participat in Pannel Disscussion on S.P.L. Prag on Dr. Ambedkar, प्रसारण तिथि- 14 अप्रैल 1997 (दूरदर्शन - दिल्ली)

8. विषय-'डा.अम्बेडकर-लेखक के रूप में' प्रसारण तिथि 6-12-1998 आकाशवाणी, दिल्ली

9. विषय - साहित्यिक गतिविधियाँ प्रसारण तिथि 29 जून 1997, आकाशवाणी, दिल्ली

10. विषय - जनसंख्या नियंत्रण और युवा दृष्टिकोण प्रसारण तिथि - 6 मार्च - 1987 (आकाशवाणी, रामपुर)

11. विषय - काव्यपाठ- प्रसारण 3-7-1988 (आकाशवाणी, रामपुर)

12. विषय - कवि गोष्ठी- प्रसारण 9-11-87 (आकाशवाणी, रामपुर)

13. कविगोष्ठी - प्रसारण 2-3-1987 (आकाशवाणी, रामपुर)

14. कविता पाठ - प्रसारण 12-9-90 (आकाशवाणी, रामपुर)

श्यौराज सिंह -'बेचैन' की रचनाओं पर किए गए पी.एच.डी. के रूप में शोध -कार्य:

1. समकालीन दलित साहित्य श्यौराज सिंह 'बेचैन' की उपलब्धियाँ, शोधार्थी रामप्रसाद, निर्देशक प्रो. विजय, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड

2. हिंदी दलित साहित्य (एक अध्याय) :श्यौराज सिंह बेचैन पर, विनोबा भावे

विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड।

3. हिंदी दलित साहित्य : रचना और मूल्यांकन :श्यौराज सिंह बेचैन के विशेष संदर्भ में, शोधार्थी योगेन्द्र प्रसाद मुसहर निर्देशक प्रो. विजय- विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड

4. श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य का मूल्यांकन, मुंबई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र

5. श्यौराज सिंह बेचैन के लेखन का आलोचनात्मक मूल्यांकन, जे. एन.यू.

6. पीएच.डी. 'हिन्दी के दलित साहित्य, एक अध्याय श्यौराज सिंह 'बेचैन' पर केन्द्रित शोधार्थी राजूराम निर्देशक सोमर साहू 'सुमन' विनोभा भावे विश्वविद्यालय - हजारीबाग-825301

7. पीएच.डी.- हिन्दी दलित साहित्य में वर्णित दलित स्त्री विवेचनाओं के सन्दर्भ में श्यौराज सिंह बेचैन के सम्पूर्ण साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन' शोधार्थी उमेश कुमार, शोध-निर्देशक डॉ. डी. पी. वर्मा, श्री जगदीशप्रसाद, झाबरमल टीबडेवाला विश्वविद्यालय विद्या नगरी, झुंझुनू, राजस्थान- 333001, 2018

8. पीएच-डी 'दलित प्रश्न और डॉ. श्यौराज सिंह बेचैन का लेखन' शोधार्थी कविता यादव, शोध-निर्देशक प्रो. राम चन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067, 2017

9. पीएच.डी- 'हिन्दी दलित साहित्य को डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' की देन' शोधार्थी अविनाश रंजन, शोध-निर्देशक डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर, 2020

10. पीएच.डी - 'डॉ. श्यौराज सिंह 'बेचैन' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व (आत्मकथा, कहानी एवं कविता के विशेष संदर्भ में),' शोधार्थी भोसले पूनम महादेव, शोध -निर्देशक डॉ. विष्णु आर. सरवदे, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, सांताकुंज, मुंबई-100098, जनवरी 2014

11. पीएच. डी - हिन्दी साहित्य के विकास में दलित साहित्यकारों का योगदान', शोधार्थी राजू राम, शोध-निर्देशक डॉ. सोमर साहू 'सुमन', विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखंड), 2010

12. पीएच.डी हिन्दी-दलित विमर्श और श्यौराज सिंह 'बेचैन' शोधार्थी विजय कुमार, शोध-निर्देशक डॉ. वी. पी. चौहान, हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पाटन-384265, 2017

प्रकाशित शोध-कार्य:-

1. 'हिन्दी दलित पत्रकारिता पर पत्रकार अम्बेडकर का प्रभाव' शीर्षक पुस्तक पीएच.डी के लिए (डॉ. वीरेन डंगवाल के निर्देशन में) किए गए शोध कार्य का प्रकाशित रूप है। इस विषय में देश का प्रथम दलित पत्रकारिता ग्रंथ के रूप में लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड 1999 में दर्ज अंग्रेजी पायनियर' 18 अप्रैल 99 के अंक में सविस्तार प्रोफाइल प्रकाशित है। इसी वर्ष 1999-2000 का महू संस्थान का एक लाख का अम्बेडकर सम्मान इस ग्रंथ को दिया गया था । पत्रकारिता एवं जनसंचार संस्थान दिल्ली के पी. जी. स्तर के पाठ्यक्रम में यह वर्षो से सहयोगी ग्रंथ रहा है।

2. स्त्री विमर्श और पहली दलित शिक्षिका- यह एक नई खोज है। यहां तक कि आवरण पर दिया गया चित्र 1893 में हुई स्वामी अछूतानंद की शादी का है। इसमें दुर्गावती के रूप में एक पहली दलित शिक्षिका और अछूत कवयित्री की खोज की गई है। English Daily News Paper the Hindu Voices of awakening में 3 अगस्त 2008 को प्रकाशित मेरे शोधपरक लेख में पहली बार दुर्गावती की कविताएं प्रकाशित हुई हैं।

3. 'गांधी का हरिजन और अम्बेडकर का जनता'- यह गांधी जी द्वारा संपादित हरिजन अंग्रेजी समाचार पत्र और अम्बेडकर द्वारा संपादित मराठी जनता नामक दोनों पत्रों को तुलनात्मक शोध अध्ययन के निष्कर्ष इस ग्रंथ में संकलित है। इन पत्रों के माध्यम से राष्ट्रीय व्यक्तियों को समझने के लिए इस ग्रंथ का अध्ययन किया जाना समीचीन होगा।

4. 'उत्तरसदी के कथा साहित्य में दलित विमर्श'- यू.जी.सी. के मेजर प्रोजेक्ट पर आधारित इस ग्रंथ में विगत 50 सालों के दलित विषयक कथा साहित्य का मूल्यांकन किया गया है।

5. समकालीन हिन्दी पत्रकारिता में दलित उवाच-तीन साल तक लिखे स्त्री के रूप में संकलित समायिक निबंधों का संशोधित व संपादित रूप अनामिका से 2007 में प्रकाशित।

आत्मकथा के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद / Translations–:

1. English Translation by Dr Tapan basu Publisher-Oxford University Press.

2. English-Tehelka-Searlised my Autobiography in 35 issues (some copies are attached) Translated by Amistsen Gupta.

3. आत्मकथा का जर्मन अनुवाद द्वारा अल्का खलाल जर्मन स्कॉलर

4. आत्मकथा का पंजाबी अनुवाद द्वारा बलबीर माधोपुरी संपादक योजना पंजाबी

5. आत्मकथा का मराठी अनुवाद - शीघ्र प्रकाशित हने वाला है, वाणी प्रकाशन नई दिल्ल-2

प्रकाशित काव्य संकलन-:

1. 'क्रौंच हूँ मैं'- कविता संग्रह (भूमिका केदारनाथ सिंह) हिन्दी अकादमी दिल्ली, - द्वारा चयनित पांडुलिपि पर सहयोग सौजन्य से सहयोग प्रकाशन द्वारा प्रकाशित। यह काव्य संग्रह लखनऊ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में एम. ए. द्वितीय वर्ष हिन्दी साहित्य दलित विमर्श और हिन्दी दलित साहित्य में सम्मिलित है। इस पर कई शोध कार्य हो चुके हैं और पांच कविताएँ- 'चेतना के स्वर' नामक पुस्तक में संग्रहित होकर गढ़वाल विश्वविद्यालय के स्नातक स्तर के काव्य में पढ़ायी जा चुकी है।

2. 'नई फसल'- कविता संग्रह (भूमिका-वीरेन डंगवाल) इस संग्रह की कविताएँ 1994 में जे.एन.यू. से सम्पन्न एम. फिल. के लघुशोध - ' हिन्दी दलित कविता पर अम्बेडकर का प्रभाव' में सम्मिलित हुई। इस संग्रह का कंवल भारती द्वारा विशेष मूल्यांकन।

'क्रौंच हूँ मैं' की प्रकाशित समीक्षाएं:-

1. महेन्द्र शर्मा-आडम्बरबाजी से दूर कविताएं- दैनिक हिन्दुस्तान।

2. ओमप्रकाश वाल्मीकि-'क्रौंच हूँ मैं' कविता संग्रह को पढ़ते हुए-दैनिक अमर उजाला-13-10-1996

3. डॉ. एन. सिंह दलित सृजन की अभिनव ओजस्विता - समकालीन जनमत -16, 31 मई 1995

4. त्रैमासिक - अंगुत्तर- अप्रैल-जून-1995

5. त्रैमासिक - युद्धरत आम आदमी, अप्रैल-जून-1995

6. त्रैमासिक- प्रज्ञा साहित्य -मार्च -जून-1995

7. दैनिक- राष्ट्रीय सहारा 12 फरवरी 1995

साहित्य चर्चा में-:

1. नहीं भूलना कि पत्थर हो तुम- दैनिक विश्व मानव 28.6.1989

2. नई फसल (संग्रह) पर संगोष्ठी, अमर उजाला- 27 जून, 1989

अनुवाद कार्य -(मराठी से हिंदी):

1. रामायण में वर्णित राक्षस बौद्ध थे- मूल प्रो. अरुण कांवले- हंस मई 1997

2. अस्पृश्यों की उन्नति में आर्थिक पक्ष का महत्व डा. बी. आर. अम्बेडकर 'न्याय चक्र' सित अक्टूबर 1994

3. राष्ट्र का पक्ष- (ले. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर)- 'न्याय चक्र'- 15 नवंबर से 14 दिसंबर 1995

4. महाड़ सत्याग्रह - डॉ.अम्बेडकर का भाषण 'न्यायचक्र' 15 जून से 14 जुलाई 1993

5. काक गर्जना - (ले. डॉ. अम्बेडकर) सा. हिन्दी बहुजन संघर्ष 19 दिसंबर 1995

6. स्वराज्य में हमारा उत्थान और उसकी पद्धति - सा. हि. बहुजन संघर्ष 28 नवंबर, 1993

7. 'स्वराज- हमारे ऊपर राज्य' - (डॉ. अम्बेडकर) सा. हिन्दी बहुजन कार्य 31 अक्टूबर 1993

8. मराठी मूकनायक की विशेष रपट (डॉ. अम्बेडकर) बहुजन संघर्ष 12 दिसंबर 1993

9. स्वराज्य की तुलना सुराज्य से नहीं - (डॉ. अम्बेडकर) बहुजन संघर्ष 17 अक्टूबर 1993

10. मूकनायक का प्रथम संपादकीय (डॉ. अम्बेडकर) मासिक हिन्दी "हम दलित" सितम्बर, 1993

11. रामायण का रचना काल (ले. प्रो. अरुण कांबले) बहुजन संघर्ष 5 सितम्बर, 1993

12. मूकनायक (मराठी) अंक 6 (ले. डॉ. अम्बेडकर) बहुजन संघर्ष 5 दिसम्बर-1993

पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तक (syllabus textbook):–

1. 'मेरा बचपन मेरे कंधो पर' : एम. ए. हिन्दी दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

2. 'मेरा बचपन मेरे कंधो पर' : आत्मकथा एमफिल. नांदेड़ विश्वविद्यालय महाराष्ट्र

3. 'क्रौंच हूं मैं' : मुंबई विश्वविद्यालय, नांदेड़ विश्वविद्यालय महाराष्ट्र, लखनऊ विश्वविद्यालय।

4. रावण कहानी : इलाहाबाद विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश।

5. कहां जाए लड़की कहानी : डॉ. शकुंतला मिश्रा विकलांग विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

6. 'मेंरा बचपन मेरे कंधो पर' : आत्मकथा एम. ए. हिन्दी इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

7. अस्थियों के अक्षर कहानी: एम. ए. हिन्दी इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

निष्कर्ष:-

इस अध्याय में प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन के व्यक्तिव एवं कृतित्व के साथ जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार से हम कह सकते है कि प्रो० श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी आधुनिक युग के हिन्दी दलित साहित्य एवं नारी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकार है जिन्होंने पत्र- पत्रिकाओं के माध्यम से दलित एवं नारी समस्या को उजागर करते हुए, दलितों एवं नारियों की समस्याओं को दूर करने का अथक परिश्रम एवं प्रयास किया है। एक सफल सम्पादक के रूप में हिन्दी साहित्य को उन्होंने बहुमूल्य सेवाएं प्रदान की है। जिससे सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य एवं दलित समाज उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

-:सन्दर्भ ग्रंथ सुची:-

1. सम्यक भारत राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका, पृष्ठ संख्या –111
2. सम्यक भारत राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका, पृष्ठ संख्या –109
3. वही, पृष्ठ संख्या –103
4. शोधार्थी की सहित्यकार से प्रत्यक्ष रूप में वार्ता, दिनांक- 10/04/2020
5. सम्यक भारत राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका, पृष्ठ संख्या –113
6. वही, पृष्ठ संख्या –117
7. वही, पृष्ठ संख्या –118
8. शोधार्थी की सहित्यकार से प्रत्यक्ष रूप में वार्ता, दिनांक- 10/04/2020
9. शोधार्थी की सहित्यकार से प्रत्यक्ष रूप में वार्ता, दिनांक- 10/04/2020
10. सम्यक भारत राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका, पृष्ठ संख्या –99
11. शोधार्थी की सहित्यकार से प्रत्यक्ष रूप में वार्ता, दिनांक- 11/04/2020
12. वही
13. वही, दिनांक- 14/04/2020
14. वही
15. वही
16. वही

17. शोधार्थी की सहित्यकार से प्रत्यक्ष रूप में वार्ता, दिनांक- 14/04/2020

18. क्रौन्च हूँ मैं, श्यौराज सिंह 'बेचैन' भूमिका।

19. सम्यक भारत राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका, पृष्ठ संख्या –98

20. वही, पृष्ठ संख्या –102

21. वही, पृष्ठ संख्या –106

22. वही, पृष्ठ संख्या –222

23. वही, पृष्ठ संख्या –223-224

24. वही, पृष्ठ संख्या –224

25. वही, पृष्ठ संख्या –225

26. वही, पृष्ठ संख्या –232

27. वही, पृष्ठ संख्या –234

28. वही, पृष्ठ संख्या –239

29. वही, पृष्ठ संख्या –246

30. वही, पृष्ठ संख्या –23

31. सम्यक भारत राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका, पृष्ठ संख्या-14

32. वही, पृष्ठ संख्या-16

33. वही, पृष्ठ संख्या-16

34. सम्यक भारत राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका, पृष्ठ संख्या –23

35. हंस पत्रिका मे अगस्त २००४ को सत्ता विमर्श और दलित' पर अतिथि-सम्पादकीय।

*****